97वाँ

विश्व संगीत समागम

तानसेन समारोह

2021

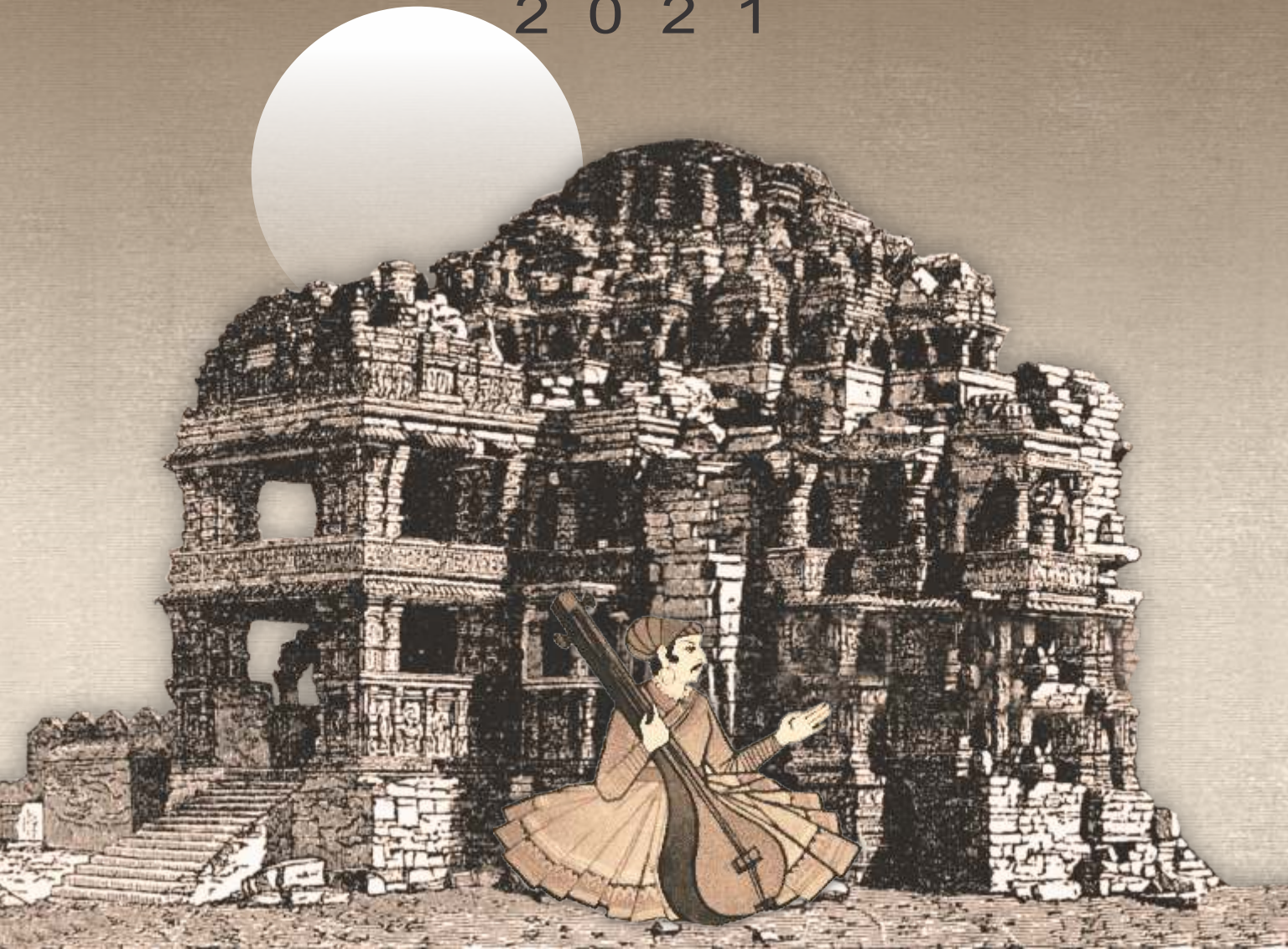

97वाँ विश्व संगीत समागम

तानसेन समारोह

25 से 30 दिसम्बर, 2021

तानसेन समाधि परिसर, हजीरा, ग्वालियर

25 दिसम्बर (सायं 7 बजे)

गमक

पद्मश्री उस्ताद पूरनचन्द बडाली एवं लखविंदर बडाली, पंजाब-सूफ़ी गायन

इन्टक मैदान, हजीरा, ग्वालियर

26 दिसम्बर (प्रातः 10 बजे)

पारम्परिक कार्यक्रम

हरिकथा एवं मीलाद

तानसेन समाधि परिसर, हजीरा, ग्वालियर

26 दिसम्बर, प्रथम सभा (सायं 6 बजे)

शुभारम्भ

माधव संगीत महाविद्यालय, ग्वालियर-ध्रुपद गायन

पं. विक्कू विनायकरम, चेन्नई - घट्म

उदय भवालकर, पुणे - ध्रुपद गायन

नीलाद्रि कुमार, मुम्बई - सितार

27 दिसम्बर, 2021 द्वितीय सभा (प्रातः)

राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर-ध्रुपद गायन

तेजस विंचूरकर एवं मिताली खरगोणकर, मुम्बई-बाँसुरी-तबला जुगलबंदी

मनोज सराफ, इंदौर-ध्रुपद गायन

पाब्लो, ब्राजील-विश्वसंगीत

संजय गरूड़, पुणे-गायन

भारत भूषण गोस्वामी, दिल्ली-सारंगी

28 दिसम्बर, 2021 चौथी सभा (प्रातः)

भारतीय संगीत महाविद्यालय, ग्वालियर-ध्रुपद गायन

मार्टिन डबॉइस, फ्रांस - विश्वसंगीत

तृप्ति कुलकर्णी, इंदौर-गायन

सुधा रघुरामन, दिल्ली-कर्नाटक संगीत

राहुल-रोहित मिश्रा, वाराणसी-गायन युगल

मैहर वाद्य वृन्द, मैहर-वृन्द वादन

27 दिसम्बर, 2021 तृतीय सभा (सायं)

शंकर गांधर्व महाविद्यालय, ग्वालियर-ध्रुपद गायन

देसिएर्तो आनदंते, अर्जेन्टीना - विश्वसंगीत

पण्डित अभय नारायण मलिक एवं साथी, दिल्ली - ध्रुपद गायन

पण्डित भजन सोपोरी, दिल्ली - संतूर

राहुल देशपाण्डे, मुम्बई- गायन

पण्डित अनिन्दो चटर्जी एवं अनुवृत चटर्जी, कोलकाता-तबला युगल

अश्विनी भिड़े देशपाण्डे, मुम्बई- गायन

28 दिसम्बर, 2021 पाँचवी सभा (सायं)

तानसेन संगीत महाविद्यालय, ग्वालियर-ध्रुपद गायन

पण्डित सुरेश तलवलकर एवं साथी, पुणे- तबला

अल्मुडेन डियाज़ ललानोस, स्पेन - विश्वसंगीत

शाश्वती मण्डल, दिल्ली- गायन

देवोप्रिया एवं सुचिस्मिता, मुम्बई-बाँसुरी युगल

प्रसाद खापर्डे, नासिक- गायन

29 दिसम्बर, 2021 छठी सभा (प्रातः)

ध्रुपद केन्द्र, ग्वालियर-ध्रुपद गायन
एकातेरिना अरिस्टोवा-तातियाना शांद्रकोवा, रशिया-विश्वसंगीत
रमाकान्त गायकवाड़, मुम्बई- गायन
भरत नायक, ग्वालियर- सितार
विनोद कुमार द्विवेदी एवं आयुष कुमार द्विवेदी, कानपुर-ध्रुपद गायन युगल
शिराज अली खाँ, कोलकाता-सरोद
सरिता पाठक यजुर्वेदी, नई दिल्ली-गायन

30 दिसम्बर, 2021 अष्टम सभा-बेहट (प्रातः)

तानसेन कला केन्द्र, बेहट-ध्रुपद गायन
अभिषेक व्यास, उज्जैन-गिटार
सुदीप भदौरिया, ग्वालियर- ध्रुपद गायन
संजय राठौर एवं साथी, ग्वालियर-तबला

29 दिसम्बर, 2021 सप्तम सभा (सायं)

साधना संगीत महाविद्यालय, ग्वालियर-ध्रुपद गायन
युसुफ रूह अलौश, इज़राइल-विश्वसंगीत
डॉ. मोनिका हितेन शाह, अहमदाबाद- गायन
तारा किनी, बैंगलोर-ध्रुपद गायन
अरूणा साँईराम, चेन्नई-कर्नाटक संगीत
शौनक अभिषेकी, पुणे-गायन

30 दिसम्बर, 2021 नवम् सभा-गूजरी महल (सायं)

सारदानाद मंदिर, ग्वालियर-ध्रुपद गायन
वैशाली बकोरे, इन्दौर-गायन
राधिका उमडेकर, मुम्बई-विचित्र वीणा
सानिया पाटनकर, पुणे-गायन

संगतकार

तबला-सत्यजीत तलवलकर, सलीम अल्लाहवाले, अनिल मोघे, अकरम खाँ, रामेन्द्र सिंह सोलंकी, विनोद लेले, गांधर्व राजहंस, शम्भूनाथ भट्टाचार्य, अंशुल प्रताप सिंह, अनंत मसूरकर, हितेन्द्र दीक्षित, सुधीर पाण्डे, निशांत शर्मा, मनोज पाटीदार
पखावज-प्रताप अवाड़, संजय आगले, संगीत कुमार पाठक, रानु कुमार मलिक, ऋषि उपाध्याय, मनोज सोलंकी, मैनाक विश्वास, दयानेश्वर देशमुख
हारमोनियम-जितेन्द्र शर्मा, विवेक बन्सोड़, विनय मिश्रा, विवेक जैन, महेशदत्त पाण्डे, धर्मनाथ मिश्रा, अभिषेक शंकर, मौसम, जमीर हुसैन खाँ, उमेश कुमार साहू, रचना शर्मा
सारंगी-फारूख लतीफ खाँ, अब्दुल मजीद खाँ, आबिद हुसैन, घनश्याम सिसोदिया, अब्दुल हमीद खाँ
मृदंगम-एम.वी. चंद्रशेखर - **बाँसुरी**-जी. रघुरामन- **घटम**- वरूण

लोकार्पण

भारतरत्न पण्डित रविशंकर पर एकाग्र मोनोग्राफ
26 दिसम्बर, शुभारम्भ अवसर पर

रागमाला

रंगों और रेखाओं में राग
रागमाला चित्रांकन परम्परा
चित्र प्रदर्शनी
26 से 29 दिसम्बर
संगीत सभाओं के समय में तानसेन समारोह स्थल

वादी-संवादी

राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर

28 दिसम्बर -अपराह्न 3 बजे
पण्डित सत्यशील देशपाण्डे
बंदिशों में निहित सौन्दर्य तत्व एक संगीतमय प्रस्तुति-सोदाहरण व्याख्यान

29 दिसम्बर-अपराह्न 3 बजे
डॉ. नर्मदा प्रसाद उपाध्याय
रागमाला चित्रांकन परम्परा-प्रस्तुतिकरण सोदाहरण व्याख्यान

97वाँ
विश्व संगीत समागम
तानसेन
समारोह
2021

यह हमारे लिए गौरव का विषय है कि हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की अविरल धारा सदियों से भारत भूमि पर विद्यमान रही है। सुर-लय-ताल के साथ गायन और वादन की इस गंगा में रसिक श्रोता सदैव अवगाहन करते रहे हैं। घरानेदार गायकी के विशिष्ट अंदाज, शास्त्रीय संगीत के प्रति प्रेम, साधना और समर्पण की अभिव्यक्ति तानसेन समारोह में प्रतिवर्ष देखने को मिल रही है। यह तो सर्वविदित ही है कि तानसेन समारोह भारत ही नहीं अपितु विश्व के संगीत जगत में अपनी अनूठी पहचान बना चुका है। मध्यप्रदेश शासन, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के संरक्षण, संवर्धन और उसके प्रचार-प्रसार के लिए सदैव रचनात्मक भूमिका निभाता हुआ दृढ़ संकल्पित है। तानसेन समारोह की यह अनवरत श्रृंखला इसी का परिणाम है। यह प्रसन्नता का विषय भी है कि हमें सांगीतिक समृद्धता विरासत में मिली है और इस विरासत को संजोने में मूर्धन्य, युवा और नवोदित शास्त्रीय संगीतकारों के साथ-साथ रसिक श्रोतागण और जन सामान्य भी सहयोगी हैं। संगीतज्ञ और संगीत रसिक ही किसी संगीत समारोह में अपनी अहम भूमिका का निर्वाह करते हैं, तभी आयोजन की सफलता सुनिश्चित होती है। नौ दशक से अधिक समय से अनवरत आयोजित हो रहा यह संगीत समागम इसका प्रबल प्रमाण है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि हर बार की तरह ही तानसेन समारोह 2021 की संगीत सभाएँ, वादी-संवादी व्याख्यान सत्र, संगीत जगत के लिए अपनी शाश्वत प्रकृति का एक कभी ना भूलने वाला अनुभव होगा।

मैं समारोह की सफलता की कामना करती हूँ और इस आयोजन में उपस्थित सभी संगीतकारों और संगीत रसिकों का आभार व्यक्त करती हूँ।

उषा ठाकुर
संस्कृति मंत्री
मध्यप्रदेश शासन

97वाँ
विश्व संगीत समागम
तानसेन
समारोह
2021

संगीत जगत में भारतीय शास्त्रीय संगीत को अनूठी और अविस्मरणीय पहचान दिलाने में भारतीय संगीतज्ञों का महत्वपूर्ण योगदान है। शास्त्रीय संगीत की सुरम्य, मनोहरी वाटिका में भिन्न-भिन्न प्रकार के पुष्पों की सुरमयी महक से संगीत सम्राट की साधना की नगरी ग्वालियर, विश्व संगीत समागम तानसेन समारोह के माध्यम से महकती रही है। संगीत के घराने, गुरु-शिष्य परम्परा और संगीत साधक संगीत की विरासत के इस महान उपक्रम में अपनी सक्रिय सहभागिता से समारोह की प्रतिष्ठा में श्रीवृद्धि करते हैं।

तानसेन समारोह के माध्यम से न केवल स्थानीय, प्रादेशिक और राष्ट्रीय स्तर के प्रतिष्ठित संगीत साधक बल्कि सुदूर देशों के संगीतज्ञ भी अपने संगीत की खुशबू बिखेरते रहे हैं। यही कारण है कि अब तानसेन समारोह विश्व संगीत समागम के रूप में जाना जाने लगा है। हमारे भारतीय संगीत की स्वर लहरियाँ अब अमिट हो चली है।

तानसेन समारोह 2021 में शिरकत कर रहे सभी संगीतज्ञ और कला रसिकों को शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए, पूर्ण विश्वास है कि यह संगीत समारोह अपनी भव्यता और शास्त्रीय शुद्धता की निरन्तरता को कायम रखेगा।

जयंत माधव भिसे
निदेशक
उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत एवं कला अकादमी, भोपाल

शास्त्रीय संगीत में घरानों की परम्परा

सुलभा पिशवीकर

शास्त्रीय संगीत में घरानों की परम्परा सामान्य श्रोता के लिए पहेली जैसा ही लगता है। शास्त्रीय संगीत की सभाओं में जब श्रोता को राग पहचान में नहीं आता है तब श्रोता के मन में एक कठिनाई उत्पन्न होती है कि हम प्रस्तुति की तारीफ करना चाहते है और तालियाँ भी बजाना चाहते है पर प्रस्तुति की किस जगह पर यह किया जाए वे समझ नहीं पाते। फिर जब शास्त्रीय संगीत के घरानों की बात होती है तब श्रोता शास्त्रीय संगीत की परिधि के बाहर ही हो जाते है और वे यह मानने लगते है यह हमें समझ नहीं आएगा और यह हमारी समझ से परे है।

वास्तव में घरानों को लेकर इतना हौव्वा बनाने की जरूरत भी नहीं और कोई कारण भी नहीं। घराना एक परम्परा है जो गायन की एक विशेष शैली को बनाए रखती है। इस पद्धति में शास्त्रीय गायन के सभी बातों के बारे में सोचना शामिल है, जैसे आवाज लगाने का तरीका, राग को अभिव्यक्त करने का तरीका, माधुर्य और ताल का विचार, बंदिश प्रस्तुत करने का तरीका, आलाप, बोल, तान इन सभी के बारे में विचार करना होता है। वैसे बहुत ज्यादा परम्परा या एक जैसी सोच से घराने की चैतन्यता कम होगी और विकास अवरुद्ध हो जाएगा। प्रतिभाशाली गायक घराने की शैली को ताजा रखता है, समृद्ध करता है और नई रीतियों को खोजता है, ऐसे कलाकार घराने को समृद्ध करते हैं।

एक घराने के प्रवर्तक की वंशावली का मतलब संगीत में एक घराना नहीं है बल्कि इसका मतलब उस घराने की संगीत परम्परा का निर्माण होना होता है। कम से कम तीन पीढ़ियाँ घराने के नियम, रीति नीतियों का पालन करें तब जाकर एक घराने के रूप में स्थापित होता है। संगीत में घराने वंश द्वारा आगे बढ़ाया जाता है ऐसा नहीं है। उदाहरण के लिए भारत रत्न पण्डित सवाई गंधर्व के किराना परिवार के असली वारिस भीमसेन जोशी हैं।

भारतीय संगीत गुरु-शिष्य परम्परा से लिया गया है। ग्वालियर, आगरा, किराना, जयपुर, पटियाला, भिंडी बाजार, रामपुर-सहसवान, मेवाती हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन के क्षेत्र में कुछ प्रमुख प्रतिनिधि घराने हैं। अधिकांश समय, घराने के नाम शहरों के नामों से निकले है ऐसा सामान्य रूप से प्रतीत होता हैं। उत्तर में कई घराने बने लेकिन उनके प्रवर्तक और प्रमुख गायक महाराष्ट्र में बस गए। यह महाराष्ट्र का सौभाग्य है। इसलिए कहा जाता था कि 'उत्तर पैदा करता है और दक्कन सराहना करता है'।

ग्वालियर घराना

ग्वालियर घराना सबसे पुराना घराना है। यह सभी घरानों का मूल है। ग्वालियर गायन को महाराष्ट्र में लाने का श्रेय बालकृष्णबुवा इचलकरंजीकर को जाता है। उन्होंने स्वतंत्र रूप से शिक्षा प्रदान की और उस दौरान उन्होंने संगीत-दर्पण नामक एक पत्रिका शुरू की। विष्णु दिगम्बर पलुस्कर उनके शिष्य थे। उन्होंने पूरे भारत में गंधर्व संगीत महाविद्यालयों की स्थापना कर संगीत के प्रसार का बहुत अच्छा काम किया। उन्होंने एक संगीतकार के रूप में भी ख्याति प्राप्त की।

बालकृष्णबुवा के अन्य शिष्य थे -

मिराशिबुवा, पण्डित गजाननबुवा जोशी के पिता अनन्त मनोहर जोशी, मल्लिकार्जुन मंसूर के गुरु नीलकंठबुवा जंगम। बी.आर. देवधर, डी.वी. पलुस्कर, शंकरराव पण्डित, विनायकबुवा पटवर्धन, वझेबुवा, राजाभैया पुंछवाले, इंगलेबुवा कुछ ऐसे नाम हैं जो सामने आते है। बी. आर. देवधर के शिष्य कुमार गंधर्व ने एक ऐसी गायकी की शैली को जन्म दिया जो एक अलग घराने की तरह महसूस होनी चाहिए। सदारंग और अदारंग की बंदिशे इसी घराने की देन है।

इस घराने में एक राग में अनेक चीजों और तरानो को सहेज कर रखा है और इसका रीतिअनुसार प्रशिक्षण भी देखने को मिलता है। सरल ताने, धीमी गति से ली जाने वाली गमका ताने (मट्टी तान) राग की सुंदर संरचना का प्रस्तुतिकरण और राग का विस्तार यह इस घराने की विशेषता है। मालिनी राजुरकर, वीणा सहस्रबुद्धे, उल्हास कशालकर आज ग्वालियर गायकी के प्रसिद्ध गायक हैं।

आगरा घराना

गग्गे खुदाबख्श इस घराने के मूल प्रवर्तक हैं। उस्ताद फैयाज खाँ, नत्थन खाँ, भास्करबुवा बखले, विलायत हुसैन खाँ, मास्टर कृष्णराव, लताफत खाँ, शराफत खाँ, रातंनजकर, राम मराठे, खादीम हुसेन दिनकर कायाकिनी, वि.रा. आठवले जैसे बुर्जुगो ने विद्यादान भी बहुत किया। इस परिवार के रत्नाकर रामनाथकर ने `प्रेमरंग' और पण्डित जगन्नाथ बुवा पुरोहित ने `गुणिदास' नाम से बंदिशो की रचना की । यह घराना सुंदर बंदिशो से समृद्ध है और सुंदर तरीके से बंदिशो की रचना करने वाले कई संगीतकार और कलाकार इस घराने में हैं। बबनराव हलदनकर उनमें से कईयों के गुरु हैं। राग की शुद्धता बनाए रखना, ताल के अनुरुप बंदिश की प्रस्तुति, सुंदर लयकारी, `रीदन तोम' जैसे शब्दांशों के साथ नोम्तोम के साथ गायन और माधुर्य इस घराने की विशेषताएँ हैं।

किराना घराना

किराना बीनकार बंदेली का गाँव है। किराना घराने का नाम उत्तर भारत में अंबाला के पास के गाँव से आया है। अब्दुल करीम खान इस घराने के जनक हैं। वह बंदे अली खान के शिष्य थे। `ताल गया तो बाल गया, सुर गया तो सिर ही गया' ऐसा इस घराने में बोला जाता है। इस घराने में सुर का महत्व है। इस गायन की विशेषताएँ सुरों पर ठहराव आलापी में कल्पनाशीलता, सरल ठेका, सुरप्रधानता और लोकप्रिय रागों की प्रस्तुति हैं।

अब्दुल करीम खानसाहेब के महत्वपूर्ण शिष्य सवाई गंधर्व, रोशनारा बेगम, विश्वनाथबुवा जाधव, बेहरेबुवा, कपिलेश्वरीबुवा। अब्दुल करीम और हीराबाई का योगदान है कि उन्होंने थिएटर में टिकट लगाकर शास्त्रीय गायन की प्रस्तुतियाँ दी। भारत रत्न भीमसेन जोशी और गंगूबाई हंगल, सवाई गंधर्व और डॉ सुरेशबाबू-हीराबाई के शिष्या प्रभा अत्रे ने भारतीय संगीत को देश और उसके बाहर लोकप्रिय बनाया, जबकि फिरोज दस्तूर ने कई शिष्यों को तालीम दी। संगीत समीक्षक डॉ. सुलभा ठाकर और आज के होनहार गायक कैवल्य कुमार गुरव और जयतीर्थ मेवुंडी इसी घराने के हैं।

बड़े गुलाम अली और पाकिस्तानी गजल गायक गुलाम अली का पटियाला घराना है, लता मंगेशकर के गुरु अमन अली और प्रसिद्ध गायिका अंजनीबाई मालपेकर का भिंडी बाजार घराना, डॉ. वसंतराव देशपांडे व आज के प्रमुख गायक राशिद खान का रामपुर-सहसवान घराना है। इंदौर घराने के अमीर खान साहब, पण्डित जसराज, संजीव अभ्यंकर का मेवाती घराना, इन सभी घरानों के बारे में थोड़ा विस्तार से लिखना आवश्यक है, लेकिन अभी के लिए केवल नाम ही ले रही हूँ।

जयपुर- अतरौली घराना

अल्लादिया खाँ साहब जयपुर-अतरौली परिवार के जनक हैं। अल्लादिया खाँ मूल रूप से उनियारा गाँव के रहने वाले थे। यह राजस्थान का एक गाँव है। खानसाहेब के पिता अहमद खान और चाचा जहाँगीर खान ने उन्हें सैकड़ों ध्रुपदों की शिक्षा दी। हालाँकि, खाँ साहेब एक ख्याल गायक बने अपने शिष्यों को भी ख्याल गायकी के लिए प्रशिक्षित किया। एक बार खाँ साहेब राजस्थान के आमलेटा संस्थान में गए तो राजा को उनका गीत इतना पसन्द आया कि वह लगातार चार दिन और रात तक उनका गायन सुनते रहे। अत्यधिक गायन से खाँ साहब की आवाज विकृत हो गई। उन्होंने अपनी आवाज में कुछ सुधार किया लेकिन पहले वाली बात नहीं रही। उन्होंने उस आवाज पर कड़ी मेहनत की और उसके अनुरूप अपना गायन बनाया। यही जयपुर घराने की गायकी है।

खाँ साहब ने इसे जयपुर गायकी क्यों कहा ?

वे ज्यादातर अलीगढ़ के पास अतरौली गाँव में रहते थे। उन्होंने जयपुर के दरबारी गायक मुबारक अली से प्रेरणा लेकर अपने गायन परिवार को जयपुर-अतरौली नाम दिया होगा।

दरअसल, एक गायकी को विकसित होने में कम से कम तीन या चार पीढ़ियाँ लगती हैं। लेकिन उस्ताद अल्लादिया खाँ द्वारा अपनी दोष वाली आवाज के साथ भी जो शैली विकसित की वह एक ही पीढ़ी में एक गायकी के रूप में पहचाने जाने लगी। बबनराव हलदनकर ने अपनी पुस्तक जुळू पाहणारे दोन तंबोरे में लिखा है। अल्लादिया खाँ साहब का व्यक्तित्व संत समान था। उनके परिवार के मूल पुरुष नाथविश्वंभर थे। खाँ साहेब गर्व से कहा करते थे कि गानसम्राट तानसेन और उनके गुरु हरिदास भी नाथ विश्वंभर के वंश में पैदा हुए थे। खाँ साहेब का मूल परिवार ध्रुपदियों का था। खाँ साहेब ने ध्रुपदों से हिन्दू देवताओं की स्तुति में कई बंदिशे बनाई। भारतीय संस्कृति हिन्दू-मुस्लिम एकरूपता से समृद्ध है। खासकर संगीत में यह सौहार्द सामने आता है। `आदिदाता अनन्त दयावन्त तुही जगतकार, एकी निराकार' खाँ साहेब की बंदिश राग मालकौंस में है। ऐसी कई बंदिशे हैं।

अल्लादिया खाँ साहब का जन्म 11 अगस्त 1855 को हुआ था। 16 मार्च 1946 को उनकी पुण्यतिथि होती है। पंद्रह वर्ष की आयु से नब्बे वर्ष की आयु तक, खाँ साहेब गायन करते रहे और गायन सिखाते रहे। उन्होंने 1945 में मुम्बई में विक्रमादित्य सम्मेलन में गाया था।

1896 से 1922 तक खाँ साहेब एक शाही गायक के रूप में कोल्हापुर में रहे। उन्होंने शाहू महाराज के अलावा किसी ओर के यहाँ पर नौकरी नहीं की।

शाहू महाराज की मृत्यु के बाद अल्लादिया खाँ साहेब को मुंबई आना पड़ा। इसके अलावा राजाराम महाराज ने उनकी पेंशन भी रोक दी। खाँ साहब ने कभी इसके लिए गुहार नहीं लगाई। वे गायन सीखा कर अपनी जीविका चलाने लगे था। मुम्बई में ही उन्होंने सुरश्री केसरबाई केरकर को लम्बी अवधि तक गायन का प्रशिक्षण दिया और दर्शकों के सामने जैसे एक गानशिल्प रख दिया। मोगुबाई कुर्डीकर ने शिष्य के रूप में दुनिया को दिखाया कि गुरु में आस्था, ताल की सूक्ष्म जागरूकता, चुस्त और तेज आवाज के साथ की जाने वाली साधना से क्या हो सकता है।

अल्लादिया खाँ साहब के जयपुर परिवार के गायन की क्या विशेषताएँ हैं ?

बंदिश की स्थायी और अंतरा को नियम अनुसार प्रस्तुत करना। ताल की प्रत्येक मात्रा पर विचार करके बंदिश को पूर्ण रूप से भरना और सहजता के साथ सम पर आना यह जयपुर घराने की विशेषता है। बंदिश को इस तरह बांधा जाता है कि पहली सम पर ही दर्शको की तारीफ मिलती है और राग की मूर्ती सही मायने में दर्शकों की आँखो के सामने होती है। शुद्ध व खुले आकार स्वरों में आलापी व तान ली जाती है। इससे सुरों की आस व मींड प्रभावी बन पड़ती है। सुर और लय का मेल यह जयपुर घराने की विशेषता है। इसलिए तबले का ठेका और ताल को ध्यान में रखते हुए की गई प्रस्तुति अपने माधुर्य के साथ ही सुरों की बारीक नक्काशी भी श्रोताओं पर प्रभाव डालती है।

इस घराने का गायन तान क्रिया पर केन्द्रित है। आगरा वाले नत्थन खाँ ने कठिन तानों के बारे में अल्लादिया खाँ से कहा था, भैया जहाँ तेरी

तान जाती है वहाँ हमारी नजर भी नहीं पहुँचती। इस घराने की विशेषता है कि गहरी साँसो से भरी दानेदार, स्पष्ट और सुरों को बिल्कुल निकट से पकड़कर रखने वाली सहज ताने है। इसके लिए खाँ साहेब ने खूब रियाज भी की और शिष्यों से भी करवाई।

गोविंदराव टेम्बे ने खाँ साहेब की रियाज की सच्चाई को सामने रखा है। टेम्बे जी एक बार नाटक देखने गए थे। रास्ते में खाँ साहब का घर था, उनका रियाज चल रहा था। गोविंदराव पाँच-दस मिनट के लिए बाहर रुके और रियाज सुनकर नाटक देखने चले गए। वह संगीत नाटक पाँच घंटे तक चला। सुबह वापस जाते समय, गोविंदराव ने उसी तान को एक अलग तरह से रियाज करते हुए सुना। ऐसी पूर्णता देखकर वे चकित रह गये।

बोल आलाप इस घराने की विशेषता है। लय को सम्भालते हुए शब्दों पर किसी भी तरह का दबाव न बनाते हुए बोल आलाप गाया जाता है। जयपुर के खाँ साहेब परिवार के उत्तराधिकारी तीन बच्चे थे - नसीरुद्दीन खाँ, मंजी खाँ और भूर्जी खाँ, उनके भाई हैदर खाँ और उनके भतीजे नाथन खाँ और पोते अजीजुद्दीन उर्फ बाबा सभी ने कमोबेश खाँ साहेब से प्रशिक्षण प्राप्त किया। इनमें से नसीरुद्दीन यहाँ कभी नहीं आए। उनकी आवाज भी खराब हो गई थी। मंजी खाँ को कम उम्र में गायन का पेशा पसन्द नहीं था, इसलिए उन्होंने कोल्हापुर के वन विभाग में नौकरी कर ली। हालाँकि, जंगल की खुली हवा में, उसने अपने द्वारा सीखे गए गीत का अभ्यास किया। हालाँकि बाद में उन्होंने गाने की ओर रुख किया। उनके संगीत कार्यक्रम, उनकी सुरीली, तरल आवाज, कल्पना, तैयारी ने उसे रंग देना शुरू कर दिया। वह महफिल में 'ऐकव तव मधु बोल' जैसी मराठी रचनाएँ गाते थे। दुर्भाग्य से, उनकी समय से पहले मृत्यु हो गई। मल्लिकार्जुन मंसूर उनके शिष्य थे और मंजी खाँ के बाद उन्होंने भुर्जी खाँ से सीखना शुरू किया। भुर्जी खाँ स्वास्थ्य समस्याओं के कारण एक संगीत गायक के रूप में प्रमुखता से नहीं आए लेकिन उन्होंने बहुतों को सिखाया। आज की गायिका श्रुति-साडोलीकर-काटकर के पिता वामनराव साडोलीकर, मधुकर साडोलीकर, मधुकर कानेटकर, पी.बालाजी, आजमबाई ऐसा उनका शिष्य परिवार है।

मंजी खाँ की असामयिक मृत्यु से अल्लादिया खाँ को गहरा दुख हुआ, क्योंकि परिवार में कोई संगीत विरासत नहीं बची थी। हालाँकि, खाँ साहब ने कई लोगों को अटूट मेहनत कर गायन सिखाया। पुराने लोगों का कहना है कि जब कोल्हापुर के गोविंदराव शालिग्राम गा रहे थे, तो उन्हें खाँ साहेब की तरह महसूस हुआ। खाँ साहेब भी यही कहते थे। गुलुभाई जसदानवाला के पास खाँ साहेब की गायी चीजों का भण्डार था। बाबा के पास विरासत के रुप में खाँ साहेब की बंदिशे हैं और उन्होंने मुक्त हस्त से इसे सभी के बीच बाँटा भी है और यह शिक्षा मुक्त मन से दी। उन्होंने शिरगांवकर भगिनी और सुशीलारानी पटेल को भी सिखाया।

सुरश्री केसरबाई केरकर

उम्र 25 वे वर्ष में केसरबाई केरकर गायिका के रूप में स्थापित थी परन्तु इसके बाद भी लगभग दस वर्ष तक उन्होंने खाँ साहेब से सुबह-शाम आठ से दस घंटे गायन का प्रशिक्षण लिया। वे जिद की मिसाल ही थी। पूरे भारत में उनकी प्रसिद्धि थी। उनके कार्यक्रम में समकालीन बुजुर्ग श्रोता भी मौजूद रहते थे। केसरबाई का गायन सुनकर आसानी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि उनका गायन कितना दमदार था। आवाज के एक ही वजन से तीनों सप्तकों में पहुँचती थी सुरों से भरे हुए आलाप और साँसो में दम भरकर ली जाने वाली ताने वे लेती थी। अपने गायन से वे सुरों के भव्य वास्तुशिल्प का निर्माण करती थी। धोंडुताई कुलकर्णी और मजीदखान (सारंगिये), मजीद खान के बच्चे मोहम्मद सईद और राशिद, भी गायन सीखते थे।

लक्ष्मीबाई जाधव

जयपुर घराने की बुजुर्ग गायिका लक्ष्मीबाई हैदरखान की शिष्या थी। बेहतरीन रियाज से उन्होंने अपना सुरीला गला बनाया था। उनकी कुछ रिकॉर्डिंग पुणे ऑल इंडिया रेडियो पर उपलब्ध हैं। धोंडुताई को उन्होंने लम्बे समय तक प्रशिक्षित किया। ललिता खाडिलकर ने भी उनको सिखाया।

सरदारबाई करदगेकर

जयपुर परिवार की सरदारबाई करदगेकर पेशावाओं तक कार्यक्रम की प्रस्तुतियाँ दे चुकी थी। लेकिन उन्हें प्रसिद्धि नहीं मिली। अल्लादिया खाँ के भतीजे नत्थन खाँ और निवृतिबुवा सरनाइक उनके गुरु थे। मुझे बाई की शिष्या होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ ऐसा वह कहती थी। उनकी आवाज कोमल और मधुर थी। बोलतान और तान उनके गायन की विशेषता है।

वामनराव देशपांडे

वरिष्ठ संगीत समीक्षक वामनराव देशपांडे की संगीत यात्रा सुरेशबाबू याने-नत्थन खाँ-मोगुबाउ कुर्डीकर की तरह है। उन्होंने अपनी पुस्तक `घरंदाज गायकी' में जयपुर गायन को उच्च गायकी जो स्वर और लय को संतुलित करते हुए प्रस्तुत करता है के रूप में वर्णित किया। मंजरी कर्वे- अलेगांवकर उनके शिष्य हैं।

मधुसूदन कानेटकर

भुर्जी खाँ के शिष्य कानेटकर हैं, जिन्होंने ऑल इंडिया रेडियो स्टेशनों से कार्यक्रम अधिकारी और केन्द्र के प्रमुख के रूप में काम किया है। अप्पा से मुझे भी काफी कुछ सीखने मिला। रेखा देशपांडे, अलका देव- मारुलकर, मंजरी आसनरे उनके प्रसिद्ध शिष्य हैं।

गानतपास्विनी और गानसरस्वती

जयपुर घराने का गौरव और मान हैं, माँ और बेटी गानतपास्विनी मोगुबाई कुर्दीकर और गानसरस्वती किशोरी अमोनकर हैं। दोनों को जयपुर गायकी के उत्तुंग शिखर के रूप में पहचानी जाती है। मोगुबाई को अल्लादिया खाँ साहब ने खंडित गायकी के अपने स्वरूप में प्रशिक्षित किया था। उन्होंने अपना सारा सोना और पैसा खाँ साहेब का शिष्यत्व हासिल करने के लिए लगा दिया। वह अपने तीसवें दशक में विधवा हो गई। तीनों बच्चों की देखभाल करना गायन की शिक्षा देना और गायन की शिक्षा प्राप्त करने के कारण ताई को माँ के रूप में प्यार नहीं मिला। इसके अलावा बच्चों में अच्छे संस्कार मिले इस कारण माँ का कठोर स्वरूप ही उन्होंने सामने रखा। एक ऐसी अनुशासित माँ जो बच्चों में अच्छे संस्कार पैदा करने की आवश्यकता के बारे में अधिक जागरूक थी। हालाँकि, माई में निहित `गुरु' ने उन्हें संगीत की बहुत सारी `माया' दी।

माई ने कम उम्र में ही अपनी माँ को खो दिया था।

एक गायिका होने का माँ को दिया गया वचन पूर्ण करने के लिए उनके पास एक कठिन, काँटेदार रास्ता था, लेकिन उन्होंने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया। जयपुर गायकी का अनुशासन, सौंदर्यशास्त्र भी उनकी दैनिक गतिविधियों जैसे सब्जियाँ काटने और खाना बनाने में शामिल थे। उनका आतिथ्य अनुभव का विषय था। सुबह पाँच बजे से रात दस बजे तक जब माई लगातार कुछ न कुछ करती रहती थी तब उनके मन के गीत उनके होठ गुनगुनाते रहते थे।

कोमल धीमे-धीमे और तारसप्तक के पंचम तक लिया जाने वाला मधुरता से पगा सुर, सुक्ष्म लय वाले बोल आलाप, सुरों के मधुरता में ही घुली हुई सम आते समय अपनी आवाज को कब और कितना रोकना ऐसी कितनी ही विशेषताएँ बतायीं। किशोरी ताई को माई ने गाना सिखाया और उनसे रियाज भी करवायी। इसके साथ ही उनका गाना बेहतरीन बने इसके लिए किसी भी तरह की अड़चन नहीं आने दी। किशोरी ताई ने गायन के सभी प्रकार गाए।

उन्होंने गजल गाने के लिए उर्दू सीखी। हाथ में हारमोनियम लेकर घर में गायी गई वह गजलें याद हैं। अभंग, मीराबाई के भजन की उनकी ऑडियो रिकॉर्डिंग कमाल की है। उनके गीत `हे श्यामसुंदर' और `जाईन विचारीत रानफुला' यह भावगीत आज भी मनमोहक हैं। `गीत गाया पत्थरों ने' से लोगों ने पार्श्व गायन में उनकी ऊँचाई को समझा। लेकिन इस लोकप्रियता के बहकावे में जाए बिना माई चाहती थी कि उनकी बेटी शास्त्रीय संगीत में एक `अद्वितीय' कलाकार बने इसके ही लिए माई मेहनत कर रही थी। इसके लिए माँ और गुरु ने क्या नहीं किया ?

ताई मूल रूप से मस्तमिजाज है। लेकिन माँ के प्यार संयम के डर ने अनजाने में उनकी कल्पना में भी एक अनुशासन लाया। आलाप तान

ऐसे राग की चौखट में बांधना घराने की पहचान लय स्वराकृतियों में निहित लय और राग का भावसौंदर्य इस प्रकार के विभिन्न प्रश्न स्वयं ही खड़े करना दिमाग कौंधने तक विचार करना रियाज और महफिल के दौरान आने वाले अनुभव से इन प्रश्नों के उत्तर ढूँढना। इस प्रकिया से ही उनकी किताब स्वरार्थ मणि यह पुस्तक आकार में आयी। आलोचकों का कहना है कि ताई ने जयपुर गायन के ढाँचे को तोड़ा। लेकिन सच तो यह है कि उन्होंने जयपुर गायन के ढाँचे को समृद्ध किया। राग प्रस्तुतिकरण को ही भावनात्मक सौन्दर्य का एक नया ढाँचा दिया।

उन्होंने माणिक भिड़े, मीरा पनाशिकर, रघुनंदन पनाशिकर, आरती अंकलीकर और देवकी पंडित को सिखाया जो आज लोकप्रिय हैं। हम नंदिनी पनाशिकर और ताई की पोती तेजस्विनी अमोनकर को उनके शिष्यों के साथ गाते हुए सुनते हैं। कमल तांबे, कौशल्या मंजेश्वर, सुहासिनी मुलगांवकर, बबनराव हल्दनकर, पद्म तळवलकर मोगुबाई के शिष्य हैं।

माणिक भिड़े की बेटी और शिष्या अश्विनी ने रत्नाकर पैई से जयपुर घराने का गायन सीखा। वह जयपुर घराने की एक होनहार गायिका हैं। चूँकि कोल्हापुर खानसाहेब का कर्म स्थल है, जयपुर गायन सीखने वाले कई कलाकार कोल्हापुर में है। निवृत्तीबुवा सरनाईक इन्हें भी भाऊशंकर राव सरनाईक के खाँ साहेब के प्रशिक्षण से जयपुर घराने की गायकी का संस्कार प्राप्त किया। उन्होंने स्वयं अनेक गायकों से राग-बंदिश प्राप्त की। उन्होंने अपनी स्वयं की बंदिशे बनाई और बहुतों को सिखाया। आनंदबुवा लिमये, सुधारकबुवा डिग्रजकर ने बहुतों को सिखाया। इनमें सुधीर पोटे, भारती वैशम्पायन, विनोद डिग्रजकर, मंगला जोशी शामिल हैं। मुम्बई में, जाधवबुवा मोहन पालेकर और रत्नाकर पैई ने जयपुर गायकी के रागों का गंभीर अध्ययन किया और इसे कई लोगों को सिखाया। कमल तांबे और कौशल्या मंजेश्वर इनकी कुमुदिनी काटदारे, प्रतिमा तिलक और ऐसे ही अन्य शिष्य हैं। धोंडुताई के भी वसंत कर्नाड जैसे शिष्य हैं। जयपुर गायकी का इस तरह फैलाव हो रहा है और लोग इसे खूब पसंद कर रहे है। धारवाड़ के राजशेखर मंसूर इस गायकी के प्रतिनिधि कलाकार हैं। यह जयपुर घराने की संक्षिप्त जानकारी है।

जब गायन बंदिशो के अनुरूप होता है तब घरानेदार गायन का महत्व खूब था।

आज सीडी, वीसीडी के माध्यम से सभी घरानों के गायकों के सर्वश्रेष्ठ गायन विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध हैं। घरानों का सख्त अनुशासन टिकेगा नहीं और वह टिका रहे इसका दुस्साहस भी नहीं करना चाहिए। कोई भी बड़ा गायक अपने घराने पहचान कायम रखते हुए अन्य घरानों की बातों को लेकर अपना गायन को आकार देता उसकी रचना करता है। भीमसेनजी के तानों का प्रकार जयपुर घराने की हल्की पहचान परिलक्षित होती है। इससे पहले भास्करबुवा बखले ने आगरा और जयपुर घराने के गायन का प्रशिक्षण लिया है। जितेंद्र अभिषेकी, अजय पोहनकर, वसंतराव देशपांडे जैसे कई उदाहरण हैं। घराने की छाप कलाकार के गायन में दिखना ही चाहिए यह अपरिहार्य है। लेकिन उसे इससे भी आगे जाना चाहिए और अन्य घरानों के सर्वश्रेष्ठ को आत्मसात करना चाहिए। हमें सभी घरानों की गायकी को सुनना चाहिए और अपने गायन क्षितिज का विस्तार करना चाहिए। ऐसे ही जागरूक और मेहनती कलाकार ही भारतीय संगीत को समृद्ध करेंगे।

प्रसिद्ध मराठी कवि विंदा करंदीकर ने कहा है कि मानव का अंत में गोत्र एक ही तो है उसी अनुसार घराने कई है परन्तु संगीत का भी एक गोत्र सुर और लय।

सौजन्य - **लोकप्रभा**
हिन्दी अनुवाद - **अनुराग तागड़े**

क्या पाश्चात्य ऑक्टाव संगीत स्केल ग्रह-अनुपात आधारित है ?

ब्रजेन्द्र श्रीवास्तव

संगीत क्षेत्र में कुछ अल्पज्ञात ऐतिहासिक तथ्य हैं जिनकी चर्चा करनी जान पड़ती है। उनमें से एक तथ्य यह है, पाश्चात्य संगीत के स्केल या सरगम जिसे ऑक्टाव कहते हैं। स्केल को बनाने व विकसित करने में सौर मण्डल के ग्रहों के बीच की परस्पर दूरी के अनुपात की भी निर्णायक भूमिका है।

इस आलेख का उद्देश्य केवल इस रोचक तथ्य से परिचित कराना है कि पाश्चात्य संगीत के स्केल के स्वर या टोन विभाजन में और ग्रहों के बीच की दूरी के अनुपात में कितना अनोखा तालमेल है। इससे यह भी लगता है कि प्राचीन विचारक प्रकृति के साथ कितना गहरा मानसिक एवं आत्मिक सम्बन्ध अनुभव करते थे और मनुष्य- प्रकृति के इस अन्तःसम्बन्ध-इन्टररिलेटेडनैस को किस तरह ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में रचनात्मक विधि के साथ उपयोग भी करते थे।

भारतीय संगीत में स्वर सप्तक सात हैं जिनके संक्षिप्त नाम स-रे-ग-म-प-ध-नि हैं। इनमें जब रेगधनि के चार विकृत या कोमल स्वर और `म' का विकृत तीव्र `म' भी गिनते हैं तो कुल 12 स्वर कहे जाते हैं। ऐसी मान्यता है कि भारतीय संगीत महर्षियों ने इस सप्तक की प्रेरणा प्रकृति से ली। महर्षि भरत ने सप्तक के स्वरों के बीच सूक्ष्म विभाजन भी किया है तथा 22 श्रुतियाँ भी बताईं हैं। पाश्चात्य संगीत के स्केल ऑक्टाव में भी सात स्वर `ए बी सी डी ई ऐफ जी' और आठवाँ पुनः ए है जो हायरटोन का है इसलिए व्यवहार में ऑक्टाव के आठ भाग हैं- 1. do, 2. re, 3. mi, 4. fa, 5. so, 6. la, 7. ti और 8. दुबारा do.

पाश्चात्य संगीत के स्केल के विकास के सम्बन्ध में यह मान्यता है कि स्केल की अवधारणा सबसे पहले पाथागोरस (57- 490 बिफोरकामन इरा) ने प्रस्तुत की। उन्होंने पृथ्वी को केन्द्र मानकर पृथ्वी से ग्रहों के बीच की दूरी और सूर्य सहित ग्रहों के बीच की परस्पर दूरी के आधार पर संगीत के स्केल की अवधारणा रखी थी। पाथागोरस ने ही सबसे पहले यह विचार रखा कि ग्रहमण्डलों की परस्पर दूरी में जो गणितीय अनुपात है उसमें विश्व का रहस्य छिपा है। उनके अनुसार समस्त विश्व ही संगीत के स्केल के अनुसार रचित है तथा यह विश्व संख्यात्मक भी है। उन्होंने ग्रहमण्डलों की परस्पर दूरी के आधार पर संगीत का स्केल इस प्रकार निर्धारित किया :

1. पृथ्वी से चन्द्र - एक टोन (या स्वर)
2. चन्द्र से बुध - सेमी (आधा) टोन
3. बुध से शुक्र - सेमी (आधा) टोन
4. शुक्र से सूर्य - एक तथा सेमी (आधा) टोन (डेढ़ टोन)
5. सूर्य से मंगल - एक टोन
6. मंगल से गुरु - सेमी (आधा) टोन
7. गुरु से शनि - सेमी (आधा) टोन
8. शनि से सर्वोच्च स्वर्ग - सेमी (आधा) टोन

इन आठ टोन के अन्तरालों का योग ओक्टाव स्केल के छह सम्पूर्ण टोन के बराबर होता है। वैसे तकनीकी रूप से ओक्टाव, दो ध्वनियों के बीच के अन्तराल को कहते हैं जिसमें एक ध्वनि की आवृत्ति दूसरे से दुगुनी होती है। जैसे कि मध्यम स्वर का कम्पन 440 हर्ट्ज है तो उससे ऊपर के स्वर का कम्पन इसका दुगना 880 हर्ट्ज होगा तथा मध्यम से नीचे के स्वर का कम्पन 220 हर्ट्ज होगा। ओक्टाव को 12 भागों में बाँटते हैं जिन्हें 12 सेमीटोन कहते हैं प्रत्येक सेमीटोन दो का 12 वाँरूट होता है पर व्यवहार में ओक्टाव के आठ ही भाग हैं।

अरस्तू ने पायथागोरस की एक और महत्वपूर्ण यह मान्यता भी रखी कि इस भौतिक विश्व की अवधारणा तीन स्थिर नोट्स से कल्पित की गई है जिनका अनुपात क्रमशः 1 :2, 2 :3 तथा 3 :4 है। (ओक्टाव के तीन अन्तराल प्रथम, चतुर्थ, पंचम तो नियत या प्राथमिक माने गए हैं जिनसे कोई भी स्केल बन सकता है। अन्य नोट्स गतिशील हैं।)

पायथागोरस का ग्रहमण्डलों का संगीत इस प्रकार कानों से सुना जाने वाला संगीत नहीं है बल्कि यह ग्रहों के बीच परस्पर तारतम्य या दार्शनिक गणितीय तादात्म्य (हारमनी) है जो संगीतात्मक सौन्दर्य से सम्पन्न है। पायथागोरस ने इस प्रकार यह प्रतिपादित किया कि संगीत का स्केल (सप्तक) अनुमानित नहीं है बल्कि इसके पीछे ग्रह आधारित गणित व तर्क है। पायथोगोरस ने इस प्रकार पाश्चात्य संगीत के स्केल के विकास में महत्वपूर्ण योगदान भी दिया है।

एक और रोचक संगीत का सिद्धांत है जिसे जर्मन गणितज्ञ, खगोलविद, दार्शनिक और फलित ज्योतिषकर्ता केपलर (1571-1630) ने Music of Spheres म्यूजिक ऑफ स्फीयर्स अर्थात ग्रहों का संगीत के नाम से विश्व के समक्ष रखा। केपलर मूलतः अपने ग्रह गति के तीन सिद्धांतों planetary laws of motion के कारण विज्ञान जगत में पहचाने जाते हैं। सत्रहवीं सदी में ग्रह गति के इन सिद्धांतों से यह सिद्ध हो गया कि ग्रहों का संचालन-जैसी की यूरोप में मान्यता थी, अदृश्य आत्माएँ नहीं करती हैं बल्कि ग्रहों की गति भौतिक शास्त्र के नियमों से संचालित होती है।

पायथागोरस ने ग्रहों के बीच की आनुपातिक दूरी से संगीत का स्केल ही बना दिया जबकि केपलर ने संगीत में व्यवहार की दृष्टि से ऐसा कोई योगदान नहीं दिया। फिर भी केपलर ने दो नए काम किए।

पहले तो उन्होंने ग्रहों की मध्यम, तीव्र, मन्द इत्यादि गतियों व सूर्य से ग्रहों के बीच की दूरी व भ्रमण मार्ग के क्षेत्र इत्यादि को वर्षों तक आकाश में दूरबीन से वीक्षण कर गति के तीन नियम बनाए। केपलर के बनाए ग्रह गति के इन तीन नियमों में गणितीय सूत्रात्मकता के साथ-साथ सरलता और अनोखी लयात्मकता भी है। जटिल सौरमण्डल की गतिविधियों को इतने सरल लयबद्ध ढंग से प्रस्तुत करना मानवीय इतिहास में अनोखा ही है।

दूसरा काम केपलर ने यह किया कि ग्रह गति के इन तीन नियमों को केवल नीरस गणित सूत्र नहीं माना बल्कि ग्रहों की गतियों को स्वरों की लयकारी कहा जो सरस हैं और एक बार समझ लेने पर इनमें अनोखे ईश्वरीय आनन्द का अनुभव भी किया जा सकता है। उन्होंने स्वयं की स्थापना पर निम्न टिप्पणी की है-

`स्वरों की इस लयकारी से मनुष्य एक घण्टे से भी कम समय में, समय के अनन्त विस्तार से खेल सकता है तथा ईश्वरीय आनन्द का

थोड़ा-सा अनुभव कर सकता है- ईश्वर जो सर्वोच्च कलाकार है... मैं इस पवित्र भावोन्माद के आगे नतमस्तक हूँ... पाँसा फेंक दिया गया है (रास्ता सदैव के लिए तय हो गया है) और मैं, नियमों पर पुस्तक लिख रहा हूँ - जो अभी पढ़ी जाएगी या अगली पीढ़ियाँ इसे पढ़ेंगी, कोई मायने नहीं रखता। यह पाठक की प्रतीक्षा एक शताब्दी तक कर सकती है क्योंकि ईश्वर ने भी एक साक्षी की प्रतीक्षा 6000 वर्षों तक की है। साक्षी से केपलर का आशय स्वयं से है जिसने ये नियम प्रत्यक्ष देखे।

केपलर ने तीसरा काम यह किया कि उन्होंने ग्रह गति के इन तीन सिद्धांतों को संगीत के स्केल से जोड़ दिया और इसे म्यूजिक ऑफ स्फीयर्स का नाम दे दिया। कार्लसागन ने कॉस्मोस नामक पुस्तक में केपलर के इन सिद्धान्तों के बारे में लिखा है:

केपलर ने harmoniamundi शीर्षक की अपनी लैटिन पुस्तक में ग्रह गति के तीन नियमों को स्थापित करने के उपरान्त ग्रहों की लयात्मक गतिशीलता गहराई से खोजी और इसे संगीत के स्केल से जोड़ दिया। केपलर ने

1. ग्रह की सूर्य से अधिकतम निकटता और अधिकतम दूरी होने के समय ग्रह के अधिकतम एवं न्यूनतम वेग के अनुपात निकाले।
2. फिर इसका प्रक्षेपण 24 घण्टे में वृत्त के अंश व कला में किया।
3. इसके उपरान्त ग्रहों के परस्पर अनुपातों को संगीत के ओक्टाव स्केल की संख्या से घटाया।
4. इन ग्रह गतियों के अन्तरालों को संगीत के स्केल पर रखकर ग्रहों की गति को संगीतमय ही बना दिया।

यही केपलर का म्यूजिक ऑफ स्फीयर्स है। स्फीयर शब्द यहाँ ग्रह या ग्रह क्षेत्र के लिए ही प्रयुक्त हुआ है। सार यह है कि केपलर के अनुसार ग्रहों की गतियों भी संगीत की लय की तरह है; जाहिर है कि यद्यपि ग्रह गति की लय को हम श्रवण इंद्रियों से सुन नहीं सकते पर इतना तो विचार में ले सकते हैं कि प्रकृति में एक लय और ताल है जिसे अनुभूत करने की जरूरत है। खासकर तब, जब आज हम प्रकृति के शोषणकर्ता बनते जा रहे हैं। भारतीय मनीषियों ने नटराज शिव की जो ललित कल्पना की है उसमें वह प्रकृति के सृजन पालन और विलय की अविरल चलने वाली इस क्रिया को नृत्य के रूप में चित्रित किया है, अब नृत्य में संगीत के ताल और लय तो सम्मिलित होते ही हैं।

चलते-चलते केपलर की कही कुछ और रोचक बातें- केपलर ने लिखा है कि प्रत्येक ग्रह का वेग तत्समय प्रचलित संगीत सप्तक के किसी न किसी स्वर से मिलता है। do-re-mi-fa-so-la-ti-do इस क्रम में पृथ्वी के टोन (स्वर) fa aur mi हैं, पृथ्वी लगातार ये ही स्वर निःसृत कर रही है जो लैटिन भाषा में famine अर्थात स्त्री होता है जो पृथ्वी का स्वभाव ही है। अथर्ववेद की माता भूमि पुत्रोअहंपृथिव्या: इस उदात्त भावना में पृथ्वी स्त्री है और माता है। क्या यह सुखद आश्चर्य नहीं है कि जर्मन खगोलविद केपलर ने ग्रहों के स्केल में पृथ्वी के इस स्त्री स्वभाव को पृथ्वी से निरंतर निःसृत होने वाले संगीत के 'फे-मी' इन स्वरों के माध्यम से अनुभूत कर लिया जो भारतीय ऋषियों ने प्रकृति के साथ ध्यान साधना के माध्यम से अनुभूत किया था। इस दृष्टि से केपलर की संगीत की अनुभूति से निकली स्थापना सम्पूर्ण संगीत जगत के लिए एक ऊँची आध्यात्मिक उपलब्धि से कम नहीं है? मेरा विनम्र अनुरोध है कि इस तथ्य को संगीत जगत के मूर्धन्य कलाकारों समीक्षकों और रसिकजनों को भी जानना चाहिए और अनुभव में भी लेना चाहिए।

केपलर ने लिखा है कि ग्रहों की गतियों के अन्तरालों पर आधारित स्केल से बने इस संगीत को उसने पृथ्वी के केन्द्र से नहीं 'सुना' अर्थात पृथ्वी को केन्द्र मानकर इस ग्रह संगीत की गणना नहीं की बल्कि सूर्य को केन्द्र मानकर ही गणना की है। सूर्य, जिसे लैटिन में लॉर्ड ऑफ सेंटर कहा गया है। इसका सीधा अर्थ यह है कि प्रकृति के मौन संगीत को सुनने, अनुभूत करने के लिए हमें पृथ्वी सहित पंचतत्व से बने इस शरीर की सुनने, देखने की पाँच ज्ञानेन्द्रियों का नहीं बल्कि आत्म तत्व का सहारा लेना होगा, आत्मा में ध्यान से लीन होना होगा। क्योंकि बाह्य विश्व का जो सूर्य जगत की आत्मा है वही अंश रूप में हमारे शरीर में आत्मा रूप से विराजमान है।

पाद टिप्पणियाँ व संदर्भ

1. Musical Harmony of the Spheres of Pythagores : Constructing the Universe : By David Layzer page 4-5 तिहाई हो।

2. Music of Spheres of Kepler : Cosmos by Carl Sagan.

पाय्थागोरस ने तार के बजने वाले भाग की लम्बाई से पिच का सम्बन्ध जोड़ते हुए यह सिद्धांत रखा कि बजने वाले तार की लम्बाई, कुल तार की लम्बाई से कितनी हो तो कौन-सा टोन या स्वर निकलेगा :

1/2 आधी हो तो Octav C

1/3 तिहाई हो तो Fifth G पंचम

1/4 चौथाई हो तो Fourth F मध्यम तीव्र

1/5 पाँचवाँ भाग हो तो Major Third E

1/6 छठा भाग हो तो Minor Third Eb

सम्पूर्ण हो तो C षडज

केपलर के ग्रह गति के तीन नियम:

केपलर ने जो ग्रहों का संगीत सिद्धान्त प्रस्तुत किया उसकी महत्ता और आत्मानुभूति के आनन्द को समझने के लिए साररूप में केपलर के ग्रह गति के नियमों को भी समझते चलना बेहतर होगा। पहला नियम कहता है कि ग्रहों का मार्ग अण्डाकार है, वृत्ताकार नहीं जैसा कि माना गया था। अण्डाकार मार्ग में एक नहीं दो केन्द्र होते हैं। इसलिए ग्रह परिक्रमा के समय सूर्य इनमें से किसी एक केन्द्र पर होता है। दूसरा नियम बताता है कि ग्रह, अण्डाकार परिक्रमा मार्ग का, समान समय में समान क्षेत्र आवृत्त करता है या पार करता है। जबकि तीसरे नियम के अनुसार ग्रह की कक्षा के आकार में तथा ग्रह की सूर्य परिक्रमा अवधि में सुनिश्चित गणितीय सम्बन्ध है। ये नियम केपलर के बाद खोजे गए तीनों ग्रहों हर्शल, नेपच्यून, प्लूटो पर भी लागू होते हैं।
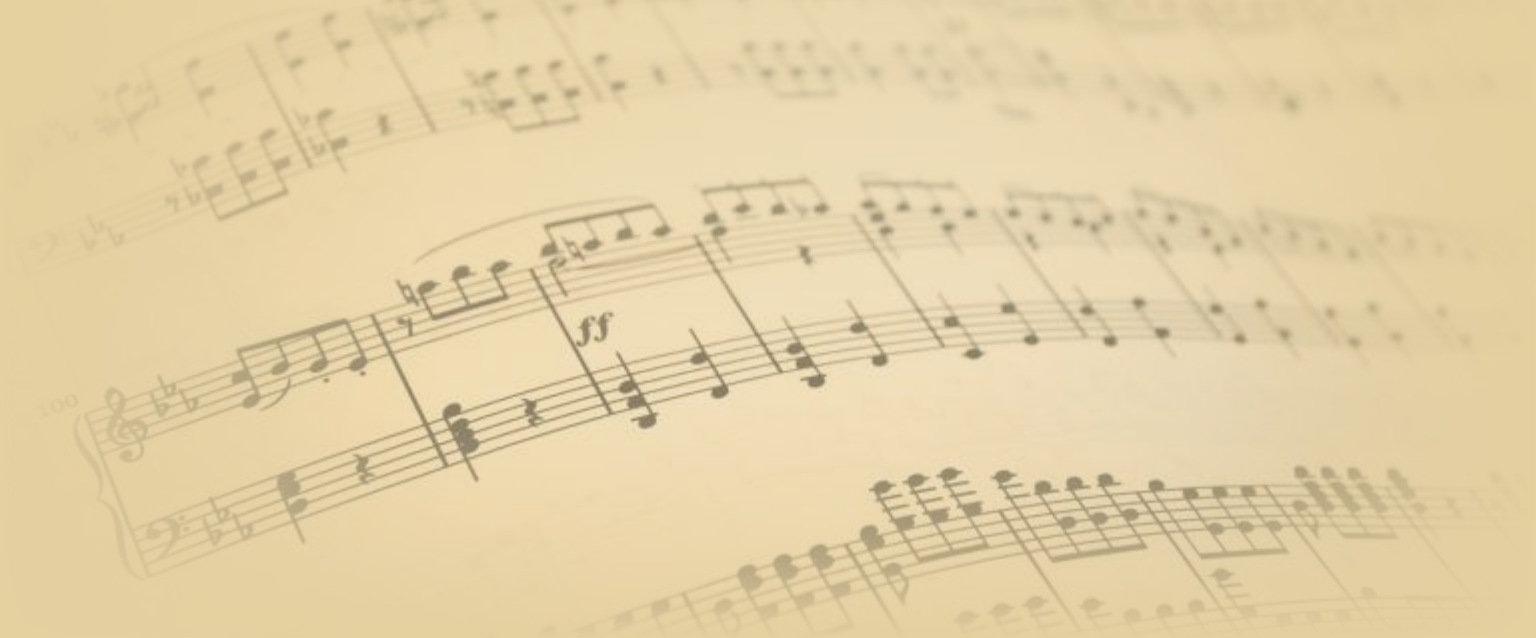
Tappa
musical form and stylistic features

Dr. Chaitanya Kunte

What is 'Tappa'?

Tappa is one of the major genres of Hindustani Art music, apart from Dhrupad, *Khayal*, Tarana and Thumri. '*Tappa*' is believed to be originated from the musical talent of Ghulam Nabi Shori, i.e. Shori Miyan with taking a creative impulse from the folk music of Punjab-Sindh region. Being originally the folk song of Punjab-Sindh region, *Tappa* has lyrics in Punjabi dialects. The lyrical content depicts the love and pathos of the separation of *Hir* and *Ranjha* or anylovers. *Ragas* expressing romance, light mood or pathos such as Khamaj, Kafi, Bhairavi, Jhinjhoti, Tilang, Sindhura, Des, and *Talas* such as Punjabi, Pashto, Sitarkhani are popularly practised for *Tappa*. The special feature of *Tappa* is the energetic *Taan* and uneven rhythmic accent. *Tappa* is more compact and less elaborative in comparison with Dhrupad, *Khayal* and Thumri.

Tappa Gayaki

The style of singing *Tappa* involves intricate patterns of '*Taan of Tappa*'. In *Tala Punjabi*, which is also called '*Tappe ka theka*', each cycle of *Tala* should have the 'tension and release' principle followed during singing *Taan*. The rule about improvising *Tappa* is, firstly show the *Thumri-Ang* in *Alap* and then proceed towards the *Tanayyat*, using the words woven in speedy and uneven rhythmic accent. The patterns of *Taan* in *Tappa* are not uniform, but it runs with a subtle variation in speed. The 'Chhoot Taan' in *Tappa* has a typical Arabic character, and it starts with a jerk, slows down and then again gets accelerated. The words are uttered by uneven pace and accent, which is another feature of

Tappa. This unevenness shows different shades of emotions. *Tappa gayaki* also involves ornamentations such as *Jamjama, Gitakdi, Khatka, Murki, Harakat*.There are two main styles of *Tappa* singing - Gwalior and Banaras tradition. There are a few structural differences such as use of the *Tala* and improvisation strategy, but the fundamental principles are the same.

Shori Miyan and other *Tappa* singers

Ghulam Nabi Shori alias Shori Miyan, son of Ghulam Rasool Khan was the court-singer of Nawab Asafuddoullah of Lucknow (1776-1797 A.D.) The common myth tells that he was initially trained in *Khayal* singing and had a great command over '*Taan*'. He was not satisfied with *Khayal* for expressing hisskill ofsinging *Taan*. So, he restlessly travelled, and in Punjab, he listened to the folk songs of camel drivers, which he thought to be suitable for his styleof singing. With using lyrics in the Punjab dialects, he composed '*Tappa*' using various musical ornamentations such as *Khatka, Jamjama, Gitakdi, Taan,* etc. Shori Miyan used the pen-name 'Shori' in his compositions. The tradition of *Tappa* singing was spread by his disciples such as Tarachand, Gammu, Meer Ali.

Many *Tappa* singers flourished in the 18th century. Baburam Sahai of Allahabad was famous for *Tappa*, who was also well versed in *Dhrupad, Khayal*. His disciple was Shadi Khan, a court-singer of Raja Udit Narayan Singh of Banaras. Mummi Khan of Lucknow, Parasadu Kathak of Banaras, Haddu Khan and Hassu Khan of Gwalior were some important names in that era. Devaji buwa Tappewale was another maestro in *Tappa*. He was a court-singer in Dhar. Great maestrossuch as Ustad Rahamat Khan and Ustad Nissar Hussain Khan kept the *Tappa Gayaki* living as a distinguishing feature in their singing.

Krishnarao Shankar Pandit, Rajabhaiyya Puchhawale, Gangadhar Telang, etc. flourished in Gwalior tradition as important *Tappa* singers in the early decades of the 20th century. In the postindependence period, Balasaheb Puchhawale, Sharachchandra Arolkar, Jal Balaporia, Rajabhau Kogje were thetorchbearers in this tradition. Arolkar's disciples such as Sharad Sathe and Neela Bhagwat had kept the tradition intact. In the scenario of performing stream, the most illustrious *Tappa* performer from Gwalior tradition is Malini Rajurkar. In the 60's and 70's, when *Tappa* did not remain frequent in concerts, she popularized *Tappa* in the general audiences; and she was the reason behind the regaining of interest in *Tappa* in the later generations. In the present time, Balasaheb Puchhawale's disciples such as Kalpana Zokarkar, Jayant Khot, Shashwati Mandal also display the skill of *Tappa Gayaki* efficiently. Pt. Kumar Gandharva was a maestro with equal command over *Tappa* as well as *Khayal*. His disciples, Mukul Shivaputra and VijaySardeshmukh attest proficiency in *Tappa* rendering. Pt. Jitendra Abisheki adapted *Tappa* from both, Gwalior and Banaras traditions and his disciple Vijay Koparkar is an accomplished *Tappa* singer. Popular artists like Arati Ankalikar, Manjiri Asnareexhibit their inclination for *Tappa* while performing in concerts, which shows rising popularity of *Tappa*. Though *Tappa* is primarily a vocal music expression, a few

instrumentalists such as Pt. Budhaditya Mukherjee (Sitar) and Dr. Arawind Thatte (Harmonium) have demonstrated their mastery over this form.

In Banaras Gharana, after maestros such as Bade Ramdas Ji, Sidhheshwari Devi, Rasoolan Bai, the noteworthy vocalists giving full justice to *Tappa* are Girija Devi, Ganesh Prasad Misra, Mahadev Prasad Mishra, Rajan and Sajan Misra, etc. Girija Devi has cultivated *Tappa* in many students in Bengal, too.

Apart from these celebrated names, vocalists from other Gharanas such as Ustad Faiyaz Khan, Pt. K. G. Ginde and Pt. M. R. Goutam (Agra Gharana), Ustad Mushtaq Hussain Khan (Rampur Gharana), Pt. Maniram and Pt. Jasraj (Mevati Gharana), etc. had shown command over *Tappa*, even though it was rarely a part of their usual concert repertoire.

Influence of Tappa on other genres

Especially in Gwalior, Rampur-Sehswan, Patiyala and Banaras traditions one can identify peculiarly '*Tappa-Ang Taan-Phirat*' in the process of unfolding of Raga. Naturally, the musicians from these traditions might have been inspired to compose Bandishes with prominent *Tappa-Ang*, which are called either 'Tappedar Bandish' if it is in medium or fast tempo or '*Tap-Khayal*' if it is found in slow tempo. In a few compositions of *Tarana*, there is distinctively clear *Tappa-Ang*. So they are mentioned as '*Tap-Tarana*'. This suggests a combination of the phrasing of *Tappa*-like swift notes, with the text having words of Tarana.

Tappa and *Thumri* are always mentioned jointly, as they are considered to be part of the same family of genres. Though both the forms have a separate identity, but there are some cohesions, also. *Thumri* and *Tappa* share common Ragas and many ornamentations in improvisation. In Banaras, there were many musicians having authority over both forms. Naturally, one can notice some influence of *Tappa* in *Banarasi Thumri*. It is a specialty of *Punjab-Ang Thumri* to have small *Khatkedar Taans*, *Murki* and unexpected *Tappa*-like curves. In *Tappa*, a note is pronounced twice or thrice with *Kan* of the previous note. This feature is common in *Punjabi Thumri*, too. Due to such familiarity and commonalities between these two genres, an intermixture of both had happened give a hybrid genre-'*Tap-Thumri*'. Such *Tap-Thumri* is especially practiced in Banaras, Gwalior and Patiyala traditions. In some cases, *Thumri* is sung using small *Gitakdi, Jamjama* patterns, though the Thumri doesn't have *Tappa-Ang*. In such cases, it is called '*Tappa-Ang Thumri*'. There are some *Hori Bandishes* with *Tappa-ang*, which are called '*Tap-Hori*'.

In the 18th cent, the musical genres in north India were in the transition phase, intermingling with each other and yet indefinite to have a specific form and musical content. So, in some old compositions, one can see a shade of one on another. In the case of *Tap-Ghazal*, the Ghazal sung with *Tappa-Ang*. '*Dil Berukhe Yaar*' in Raga Yaman is such traditional composition. It is improper to have *Tappa-Ang* in *Bhajan* or *Padas*, as the devotional content demands clear utterance of the lyrics with

less ornamentation and hence *Tappedar Taan* seems to be irrelevant. But still, we find some *Bhakti-Padas* having influence of *Tappa*, e.g. '*Vande Nandakumaram*' (Kafi), '*Yaa Bhawanidhituna*' (Khamaj). Some compositions of *Ashtapadi* are also sung in *Tappa* style, e.g. *Maadhawe Sakhi Maa*' (Bhairavi).

Tappa **in other languages**

Though the language for *Tappa* is considered to be Punjabi-Multani dialect, there are few compositions in *Braja Bhasha* in the repertoire of Gwalior Gharana. Pt. Vishnu Digambar Paluskar published two of such Hindi *Tappa*s in book, '*Tappa Gayan*'. These *Tappas* are '*Sawariya raho rav re*' a traditional composition and '*Baithi sagun bicharati*' composed by Paluskar himself using the lyric of Sant Tulsidas. Ustad Mushtaq Hussain Khan of Rampur Gharana have sung Hindi *Tappas, 'Aja Gale Lag Ja'* (Kafi) and '*Kaisi Bajai Murali*' (Sarparda). Pt. Kumar Gandharva composed *Tappa* in the dialect of Malwa region. Pt. Dinkar Kaikini have composed a *Tappa* in Hindi, '*Madho Mukund Murari*' (Raga Kafi). Pt. Ramashray Jha 'Ramrang' have composed a Hindi *Tappa* in Khamaj-'*Bawara Kahe Tu Maan Kare*'. In the current generation of composers, Dr. Chaitanya Kunte too has composed several *Tappa* in Hindi. Besides Marathi *Lavani* and *Padas* having *Tappa-Ang*, there are few pure *Tappa* compositions, e.g. '*Ughada na ti kadi*' (Khamaj). Pt. Balasaheb Puchhawale has composed a Marathi *Tappa* - '*Swamiya Mandiri*' (Bhairavi) and Pt. Sharachchandra Arolkar composed a Marathi *Tappa*, '*Wajiv Re Murali*' (Bhairavi). Dr. Ashok Da Ranade also composed several Marathi *Tappa* compositions.

The pioneers of Bengali *Tappa* were Nidhubabu or Ramanidhi Gupta (1741-1839) and Kali Mirza or Kalidas Chattopadhyay (1750-1826). The character of Bengali *Tappa* is somehow different from that of *Tappa* of Shori Miyan style. The Bengali *Tappa* style is devoid of fast *Tanyyat* of *Tappa* of Shori Miyan's style. Instead, it is of madhyalaya, with slow undulated patterns that unveil the exquisite mood of the lyrics.

Between the 19th and 20th centuries, many singers and composers elevated Bengal's *Tappa* to a great height of popularity, such as Shridhar Kathak, Ashutosh Deb, Amrutlal Basu, Durgadas Dey, Jagannathprasad Basumallick, Munsi Vilayat Hussain, Shivachandra Sarkar, Vishmadev Chattopadhyaya, Ramkumar Chattopadhyaya etc. Bengali *Tappa* had influenced considerably all major musical genres of Bengal, viz. Shyama Sangeet, Brahmo Sangeet, Rabindra Sangeet, Svadeshi Gana, Nazrul Giti.

Due to the unavailability of proficient teachers, the situation of *Tappa* is uncertain in this first half of the 21st century. Due to inadequate documentation of traditional compositions of *Tappa* and its *Gayaki*, scholars face a problem in analyzing the *Tappa*, it being a disappearing genre of Hindustani Art music. But the growing interest for *Tappa* from musicians and audiences makes one optimistic for the future.

बंदिश

सत्यशील देशपाण्डे

संगीत प्रवाही आकारतत्व है।
चित्रफलक की भाँति वह स्थिर नहीं।
रागसंगीत प्रवाही आकारतत्व है, जहाँ स्वरप्रवाह की धाराएँ कहीं सिकुड़ती हैं, तो कहीं फैलती हैं, पर लौटकर पुनश्च उद्गम पर आकर बहने लगती हैं। बहकती नहीं।
राग का चलन तथा ताल के आवर्तन पुनर्जन्म में विश्वास रखते हैं, गतजन्म के पुण्यसंचित पर भी। राग के भीतर के स्वरों के आपसी रिश्ते होते हैं। सप्तक में स्वरों का अपना आना-जाना, चाल-चलन होता है।
इन शक्यताओं को समेटने के लिए प्रथम एक सुनिश्चित आलाप की जरूरत होती है जो बार-बार दोहराया सके। यही बंदिश का जन्म है।
साकारित होने जा रहे गायन को, उसके नाद-लय-रागरूप को लेकर समूचे सौंदर्यतत्व को संकेतरूप में बंदिश के माध्यम ही से सुरक्षित रखा जा सकता है। बंदिश के पट उपज अंग से खोलकर ही उसमें सुप्त सौंदर्य की पूर्ण अनुभूति प्राप्त होती है, उसमें सुप्त संकेतों की संदिग्धता हटती है, पिया मिल जाते हैं- कभी सांगीतिक यथार्थ की नापतौल करते हुए, तो कभी स्वरजन्य किसी और ही भाव में विभोर।
गाते समय यह सब कायम रखने से ही राग प्रत्यक्ष में रूप धारण करता है। इन सब तत्वों के संकेत जिस स्वररचना में निहित होते तो हैं, पर जिनकी पूर्ती सम्पूर्ण रूप में नहीं मिल पाती, उसे मूलत: हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के परिवेश में बंदिश कहा जा सकता है।
शब्दकोशों में बंदिश के बहुत ही मार्मिक एवं दिलचस्प अर्थ प्राप्त होते हैं। पाबंदी अथवा अनुरोध एक ओर, तो योजना अथवा निबंध दूसरी ओर।
प्राथमिक तौर पर बंदिश के घटक हैं:

1. रागवाचक स्वरसंगती

2. लयतत्व: इसमें निहित है लयकारी, लयदारी तथा syncopation- जिसका हिन्दी में प्रतिशब्द नहीं है।
3. शब्द: इसमें निहित है:

क. नादार्थ, नादमयता, आघातक्षमता
ख. उच्चारण में सुप्त अभिनय
ग. नृत्यमयता
घ. भाषिक अर्थ

उच्चारण की विविधताएँ, विशिष्टताएँ भी बंदिश के गायन में अपना रंग पैदा करती हैं। शब्दों के भाषिक अर्थ के अलावा स्वर एवं व्यंजनों के उच्चारण में आघात तथा नादार्थ निर्माण करने की क्षमता होती है। सृजनात्मक ढंग से इस उपलब्धी को गायकों ने उपयोग में लिया है।
अगर काव्य अच्छा, खास तौर पर वर्तमान सामाजिक तथा सांस्कृतिक संवेदनाओं को मुखर करता हुआ हो तब सांगीतिक यथार्थ में चार चाँद लगा सकता है। अपितु संगीत के भ्रष्ट तथा अनाकलनीय उच्चरों से महान कलाकारों से संगीत का अर्थ ग्रहण करने में कोई क्षति नहीं पहुँचती। फिर भी हमें यह ज्ञात होना चाहिये कि उत्तरी हिन्दुस्तान की विपुल बोली भाषाओं के वैविध्य ने बंदिशों का काव्यपक्ष तथा भावपक्ष बहुत सम्पन्न बनाया है।
पुनश्च बंदिशों के घटकों की ओर मुड़ते हैं।

1. रागवाचक स्वरसंगति
2. लयतत्व
3. शब्द

यह तीन घटक उनकी पूरी सम्पन्नता और व्याप्ति लिए हुए, विभिन्न मात्रा में, बंदिशों में अंतरभूत होते हैं। अलग अलग घराने तथा प्रतिभाएँ ऊपर निर्दिष्ट घटकों का अपना अनोखा व्यवस्थापन करते हैं। (राग रासोई पागड़ी बंधे सो बंध जाए)। जिस मात्रा में यह मूलघटक उपयोग में लाए जाते हैं (बंदिश में) उसी से कलाकार की प्रस्तुति का सौंदर्यशास्त्र सिद्ध होता है। इन घटकों के विभिन्न मिश्रणों ही से एक राग में विभिन्न तथा अनेक बंदिशें होने का मतलब तथा बंदिशों को अपना मूल्य तथा अस्तित्व प्राप्त होता है। एक राग में अनेक बंदिशें होती हैं, अपने पृथक विभ्रम लिए हुए। अपने विशिष्ट अंदाज़, खूबसूरतियाँ संजोए हुए।
अलग-अलग बंदिशें, यानि अलग-अलग किस्म का सौंदर्यबोध जहाँ सुरक्षित हैं ऐसी मंजुषाएँ, संदूकें... यह सौंदर्यबोध अभिमुक्त करने के लिये प्रतिभा की कुंजी आवश्यक होती है। साथ ही उस धन का इस्तेमाल सही तरीके से करने के लिए प्रज्ञा की आवश्यकता होती है जो कि तालीम से संस्कारित होती है।
विशिष्ट बंदिशों में जो विशिष्ट रागरूप या सौंदर्यतत्व संकेत रूप में बाँधकर पकड़ रखा है, उसकी उपज अंग से बढ़त करना, उस सौंदर्य के विभिन्न भंगीमाओं की वृद्धि करना, साथ ही मूल स्वरवाक्यों के सूत्र को गहरा करना, उस लंगर से ना बहकते हुए प्रतिभा की नैय्या को रागप्रवाह में रखना, यही सबकुछ गायक का मकसद होता है।
रचना `बंदिश' इस नामाभिधान अथवा संज्ञा के पात्र हो, इसलिए आवश्यक गुण इस प्रकार हैं:

1. निहित राग और ताल में नवनिर्माण तथा व्यक्तिगत संवेदनाओं की अभिव्यक्ति हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की अविभाज्य विशिष्टता मानी गई है। रचना में यह गुंजाइश बरकरार होनी चाहिए। इसी तत्व को आगे बढ़ाएँ तो यूं भी कहा जा सकता है कि सही बंदिश वह है जो हर घराने के तथा विभिन्न गायकों के अंदाज़ को, प्रतिभा के पट को सहजता से ओढ़ ले।
2. अच्छी बंदिश को परम्परा का, पारम्परिक बंदिशों का संदर्भ होता है। वे कभी सांगीतिक सवाल का जवाब होती है। प्रतिभा को प्रतिभा

ही द्वारा दी हुई प्रतिक्रिया, दाद होती है।

3. रचना का मुखड़ा रागवाचक होना चाहिए। बंदिश में जो रागरूप निहित है, उसका संकेत आमंत्रण मुखड़े में होना चाहिए।
4. मुखड़ा लचीला होना चाहिए। मुखड़े में गायक की प्रतिभा को, उपज को आवाहन होना चाहिए।
5. यह देखा गया है कि अच्छी बंदिश में दोहराने के लिए, आवृत्ति करने के लिए ज्यादा स्वरसमूह या शब्दसमूह पाए जाते हैं। ऐसे समूहों का व्यक्तित्व मिलनसार होता है। वे सहजता से एक दूसरे में विलीन होते हैं।
6. बंदिश में निहित विशिष्ट सौंदर्य की वृद्धि करने के लिए, उस अंग से उपज करने के लिए आवश्यक तर्कशास्त्र का संकेत बड़ी महीन सूक्ष्मता से बंदिश में प्राप्त होता है। यह संकेत संदिग्ध होता है। उसमें चेतावनी होती है राज़ को राज़ न रहने देने की। तब ही वह उद्युक्त करता है कि बार-बार उसे टटोलें, परखें।
7. Film Song की भाँति बंदिश अंतिम सत्य नहीं है, product नहीं है। It is the beginning of a process.

बंदिशों का महत्व:

1. ख्याल के पूरे इतिहास का सबूत और उसका विश्लेषण बंदिशों द्वारा ही प्राप्त होता है।
2. कलाकार की संवेदना को राग का जो दृष्टिकोण या सौंदर्यतत्व अनुभव होता है, उसे सुरक्षित रखने के लिए आवश्यक माध्यम बंदिश ही है।
3. बंदिशों द्वारा ही यह विरासत शिष्य को प्रदान की जाती है।
4. विभिन्न शैलियों का तुलनात्मक अभ्यास बंदिशों को ध्यान में न लेते हुए असंभव है।
5. बंदिशों द्वारा ही विशिष्ट घरानों की छबी, उनका अपना सौंदर्यशास्त्र ज्ञात होता हैं।
6. विशिष्ट गायकों के सांगीतिक व्यक्तित्व की झाँकी, झलक बंदिशों के माध्यम ही से मिलती है। मिसाल के तौर पर,
   - अ. कौन कौन कलाकारों ने राग को कैसे-कैसे देखा ?
   - ब. शब्दों को कैसे ध्वनित किया ?
   - स. गायकों की कहन तथा उच्चारणों की अंगभूत खासीयतें क्या हैं ?

   आदि बातों का पता बंदिशों से ही चलता है।
7. तालक्रिया, लयक्रीडा, ताल का treatment अलग-अलग छंद, उनकी मालिकाएँ, विभिन्न मात्राओं से उठने वाले मुखड़ों से संभव होने वाले खानापुरी के अंदाज़, लय की काटछाट आदि बातों का प्रमाण बंदिशों द्वारा ही प्राप्त होता है।

बंदिश का कार्य:

सौंदर्य की अनुभूति को साकार रूप में मूर्त करना एवं उसे सुरक्षित रखना बंदिश का कार्य है। मजाक की तौर पर... बुरा या गलत गाने के लिए भी आवश्यकता बंदिश की ही होती है।

लघुचित्रों में रागमाला के अंकन: स्वरों के रंग स्वरूप

नर्मदा प्रसाद उपाध्याय

सृजन या रचना सृष्टि की आकांक्षा का नाम है। इस आकांक्षा ने आकाश में तारे रचे, धरती पर हरियाली रची, मानव के मन में अपने आपको रचा और फिर इस मानव मन ने भित्तियों पर अजंता तथा पत्थरों पर कोणार्क और खजुराहो रचे। मानव के मन की यह रचना यात्रा यहीं नहीं थमी, उसने कण्ठ में रागों को रचा, ऐसे रागों को जो रंग और रेखा से मिलकर दृश्यमान हो उठे, बोलना, देखना हो गया, स्वर आँखों के उत्सव हो गए।

यह राग शब्द `रंज' धातु से बना है। रंज के दो अर्थ हैं रंगना और प्रसन्न कर देना। इसलिए राग वह जो चित्त को ऐसा रंगे कि उसकी परिणति प्रसन्नता में हो, आनन्द में हो।

जहाँ तक राग के इतिहास का प्रश्न है वेदों में इसके उद्गम के तत्व स्पष्ट हैं। वैदिक युग में मंत्रोच्चार के विशेष स्वर थे जो धीरे-धीरे निश्चित लय में बंधे। वेदों की ऋक् एक स्वर में, गाथा दो और साम तीन स्वरों में गाई जाती थी। बाद में पाणिनी ने अपनी अष्टाध्यायी में तीन वैदिक स्वरों की तुलना अपने समय के सात वैदिक स्वरों से की। भरत के नाट्यशास्त्र जो ईसा से चार सौ वर्ष पूर्व की रचना है, में संगीत का विस्तृत विवेचन किया गया। विद्वान मानते हैं कि भरत कोई एक व्यक्ति नहीं है, दत्तिल, नन्दी, कोहिल, भरत और मतंग ये पाँच भरत कहे जाते हैं।

राग शब्द की उत्पत्ति विद्वान दत्तिल या नारद द्वारा रचित `रागसागर' से मानते हैं तथा नारद के ही `संगीत मकरन्द' में सबसे पहले रागों का वर्गीकरण मिलता है। मतंग के `वृहद्देशी' (जिसे चौथी से सातवीं सदी के बीच रचा गया माना जाता है) में राग का उल्लेख है। राग शब्द के उल्लेख न केवल भगवद्गीता, मैत्रीउपनिषद और मुंडकोपनिषद में है बल्कि इसका उल्लेख बौद्ध धर्म के ग्रंथों में भी है।

दामोदर पंडित के `संगीत दर्पण' में राग को परिभाषित किया गया है। कई विद्वान राग को ध्वनि में निबद्ध चिंतन कहते हैं।
भारतीय शास्त्रीय संगीत में दो प्रमुख धाराएँ हैं- उत्तर भारतीय अथवा हिन्दुस्तानी संगीत तथा दक्षिण भारतीय अथवा कर्णाटक संगीत। इन दोनों पद्धतियों में राग की अवधारणा है। सिखों के महान ग्रंथ `गुरुग्रंथ साहिब' में रागों की परम्परा है तथा दक्षिण एशिया में प्रचलित सूफी अवधारणा में कव्वाली परम्परा में भी रागों का निर्धारण है।
छः प्रमुख राग माने गए हैं। ये हैं भैरव, मालकौंस, हिंडोल, दीपक, श्री तथा मेघ। रागों की रागिनियाँ भी होती हैं, रागपुत्र तथा रागवधुएँ भी होती हैं। इनकी प्रस्तुति का समय भी नारद ने निर्धारित किया है। सोमेश्वर भूपति के द्वारा रचे गए `मानसोल्लास' तथा `अभिलाषार्थ चिंतामणि' में विभिन्न रागों का उल्लेख करते हुए उनमें निहित रस और गायन के समय को भी बताया गया है।
रागों के निर्धारण के बाद उन्हें रागमाला में संयोजित किया गया। सोलहवीं सदी में मेषकरण या खेमकरण ने रीवा में रागमाला की रचना की। उन्होंने पाँच मुख्य राग, पाँच रागिनियाँ और रागपुत्र निर्धारित किए।
ह्नुमान परम्परा के अंतर्गत छः राग और तीस रागिनियाँ निर्धारित की गईं।
तीसरी परम्परा चित्रकार परम्परा है अर्थात यह वह परम्परा है जिसमें चितेरों ने चित्र बनाए। इसमें छः राग तथा तीस रागनियाँ हैं।
राग पर केन्द्रित अनेक ग्रंथ हैं। वेदों से लेकर पाणिनी की `अष्टाध्यायी' तथा भरत के `नाट्यशास्त्र' तक में संगीत व राग की पूर्ण अवधारणा है। इनके बाद परवर्ती काल में राग केन्द्रित अनेक ग्रन्थ लिखे गए।
यह जानना भी बड़ा रोचक होगा कि मेवाड़ के वीर शासक राणा कुम्भा ने संगीतराज, संगीत मीमांसा तथा संगीतक्रम दीपिका जैसी कृतियाँ रचीं।
रागों के विभाजन के सम्बन्ध में भी अनेक ग्रंथ लिखे गए।
दामोदर पंडित ने `संगीत दर्पण' में रागों की तीन सूचियाँ निर्धारित कीं।
शिवाजी के पुत्र सम्भाजी के शिक्षक वेद ने `संगीत मकरन्द' तथा `पुष्पांजलि' नामक ग्रंथ लिखे और विभिन्न रागों का उल्लेख किया।
दक्षिण में पुण्डलिक विट्ठल ने अपने राग सम्बन्धी वर्गीकरण की अवधारणा प्रस्तुत की।
आधुनिक युग में भातखण्डे जी जिनका मूल नाम विष्णु शर्मा था, `अभिनय मंजरी' नामक ग्रंथ में रागों का वर्गीकरण किया।
तानसेन से लेकर पण्डित भीमसेन जोशी व कुमार गन्धर्व जैसे महान संगीतकार भारतीय परम्परा में हुए जिन्होंने विभिन्न रागों की रचना की।
रागों के नामकरण क्षेत्रों के आधार पर भी हुआ जैसे मालवा से मालवी, खम्बात से खम्बावती, गांधार से देवगांधार और कर्णाटक से कानड़ा जैसे रागों का नामकरण हुआ।
पक्षियों के नाम से भी राग बने जैसे हंसध्वनि, हंसविहाग तथा पशुओं के नाम से भी रागों का नामकरण हुआ जैसे पीलू अर्थात हाथी।
जातियों के नाम से भी राग बने जैसे शक से शकतिलक, टक से टक राग। ऐसे रागों का उल्लेख मतंग ने `वृहद्देशी' में किया है।
राग और रागिनियों के सम्बन्ध में संगीतशास्त्र में विस्तार से विचार किया गया है।
जहाँ तक रागों के चित्रांकन का प्रश्न है यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि राग जिस तरह गाये जाते हैं उस तरह वे चित्रांकित नहीं किए गए हैं। इसलिए कि राग के सम्बन्ध में संगीतकार और चित्रकार दोनों की अवधारणाओं में अन्तर रहा है। चितेरे ने रंगों और रेखाओं के माध्यम से रागात्मकता को साकार किया है।
आशय यह है कि चितेरे ने राग के भाव को प्रतीकों के माध्यम से चित्रित किया। जैसे यदि उसे राग हिंडोल को चित्रित करना है तो उसने राधा कृष्ण को या नायक-नायिका को झूले में झूलते हुए चित्रित कर दिया।
रागिनी आसावरी को उसने नायिका के हाथ में बीन व उसके आसपास सर्पों को चित्रित कर दिया क्योंकि आशी एक विशेष प्रकार का सर्प होता है।

इसी प्रकार मेघमल्हार में आसमान में उठते बादलों को चित्रित करते हुए उसका अंकन कर दिया व राग दीपक में नायक-नायिका के हाथ में दीपक लिए हुए उन्हें चित्रित कर दिया। कुछ राग-रागिनियों के अंकनों में चित्रकार ने प्रतीक चुन लिए जैसे कुकुभ रागिनी के लिए मोर, कानड़ा के लिए हाथी, तोड़ी रागिनी के लिए हरिण। खम्बावती के लिए ब्रह्मा।

चितेरों ने इस परम्परा से हटकर भी चित्र बनाए जैसे जयपुर क़लम में रागिनी आसावरी का जो अंकन किया गया उसमें नायिका के हाथ में न बीन है न साँप। उन्होंने नायिकाभेद को रागमाला अंकन में विशेष रूप से स्थान दिया।

कलाकार ने अनेक ऐसी रागिनियाँ भी चित्रों में रचीं जिनका कोई उल्लेख संगीत ग्रंथों में नहीं था। चितेरों ने अपनी कल्पना से पशुओं और पक्षियों को भी चित्रित किया।

राग-रागिनियों के अंकनों को रागमाला का अंकन कहा गया। इसके सबसे प्राचीनतम उदाहरण जैन ग्रंथ 'कल्पसूत्र' में हैं जो ईस्वी सन् 1475 में अपभ्रंश शैली में रचा गया।

ईस्वी सन् 1610 में दतिया के राजा वीरसिंहदेव के महलों में अठारह रागिनियों के चित्र बनाए गए तथा राजा भारमल की छत्री में ईस्वी सन् 1620 में रागों के अंकन बने। बूंदी के छत्रमहल तथा उनियारा के भित्तिचित्रों में भी सत्रहवीं-अठारहवीं सदी में रागमाला के चित्र बने। लघुचित्रों के अनेक सेट बनाए गए। इनमें सोलहवीं सदी की चुनार रागमाला के चित्र सुप्रसिद्ध हैं। ईस्वी सन् 1605 में मेवाड़ में चावण्ड रागमाला बनी, जिसके चित्र निसारदी नामक चितेरे ने बनाए। मेवाड़ में ही ईस्वी सन् 1607 में गिलुण्ड की रागमाला बनी।

इसी अवधि में मारवाड़ अंचल में बीकानेर की रागमाला बनाई गई व ईस्वी सन् 1625 में बीकानेर में ही एक और रागमाला बनी जिसे लौड रागमाला कहा जाता है। इसके बाद उदयपुर, जयपुर, अलवर, पाली, सांवर, अजमेर व आमेर सहित बूंदी और कोटा तथा सिरोही क़लमों में राजस्थान में चित्र बने।

पहाड़ों में कांगड़ा, बसोहली और नूरपुर जैसे स्थानों पर रागमाला के चित्र बनाए गए। मुग़ल क़लम व मालवा क़लमों में भी सोलहवीं-सत्रहवीं सदी में रागमाला के चित्र बने। दक्खिनी क़लम में ये चित्र अहमद नगर, गोलकुण्डा तथा हैदराबाद में विशेष रूप से बने। सुदूर पश्चिमी मालवा के रतलाम और हाड़ौती अंचल से लगे राघौगढ़ में रागमाला के सुंदर अंकन हुए। नरसिंहगढ़ में माधौदास और उसके शिष्यों ने मालवा शैली में रागमाला के चित्र बनाए। ऐसे विभिन्न क़लमों के विभिन्न रागमाला शृंखला देश और विदेश के विभिन्न संग्रहालयों तथा व्यक्तिगत संग्रहों में हैं।

रागमाला के अंकन में लाल, पीले और नीले तथा इन तीनों रंगों के मिश्रण से तैयार किए गए विभिन्न रंग प्रयुक्त किए गए हैं। इन रंगों के संकेत भी हैं, जैसे शांत के लिए श्वेत, श्रृंगार के लिए श्याम, रौद्र के लिए रक्तिम और अद्भुत के लिए पीला। चितेरों ने मुख्य रूप से इन चित्रों को बनाने में परम्परागत रंगों का उपयोग अधिक किया जैसे खड़िया, काजल, हंसराजशिंगल्, रामरज, गेरू व हरा भाटा। उन्होंने वानस्पतिक रंग और ऑक्साइड रंग तथा धातु रंग भी प्रयुक्त किए तथा विभिन्न प्रकार की तूलिकाओं से इन चित्रों का अंकन किया।

देश की विभिन्न चित्रशैलियों में रागमाला के ये चित्र निरंतर तीन सौ वर्षों तक पन्द्रहवीं से उन्नीसवीं सदी के बीच बनाए जाते रहे हैं।

यह संक्षिप्त झांकी है रागमाला के अंकनों की। रागमाला के ये अंकन विश्व में अद्वितीय हैं। स्वरों का ऐसा बेजोड़ अंकन विश्व में अन्यत्र नहीं हुआ। ये अंकन हमारी अनमोल विरासत तो हैं ही, हमारी आगामी पीढ़ियों की प्रेरणा भी हैं।

पद्मश्री उस्ताद पूरनचन्द बडाली एवं लखविंदर बडाली, पंजाब-सूफ़ी गायन

सुप्रसिद्ध सूफी गायक और संगीतकार बडाली बंधु पंजाब के संगीतकारों के परिवार की पाँचवी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं जिन्होंने सूफी संतों के संदेशों को जनमानस में प्रसिद्ध किया। पटियाला घराने के पण्डित दुर्गादास और उस्ताद बड़े गुलाम अली खान जैसे संगीतकारों से आपने संगीत गायन का मार्गदर्शन प्राप्त किया। आपकी जोड़ी ने सर्वप्रथम 1975 में हरवल्लभ संगीत सम्मेलन-जालंधर में प्रस्तुति देने का प्रयास किया जहाँ उन्हें गायन की औपचारिक अनुमति नहीं मिली। निराश होकर आप दोनों ने हरवल्लभ मंदिर में भेंट स्वरूप संगीत प्रस्तुति करने का फैसला किया जहाँ ऑल इंडिया रेडियो जालंधर के एक कर्मचारी ने आपको सुनकर आपका पहला गाना रिकॉर्ड किया। आपने गुरबाणी, काफी, गजल और भजन आदि शैलियों को गाया है। आप दोनों ही परमेश्वर को समर्पित सरल जीवन जीते रहे एवं संगीत प्रशिक्षण हेतु भी आपने कभी अपने शिष्यों से कोई मानदेय नहीं स्वीकार किया। आप दोनों ने ही कभी भी व्यवसायिक रूप से काम नहीं किया और रिकॉर्डिंग के नाम पर आपके पास बहुत ही कम प्रमाण है। आप दोनों का ही विश्वास है कि गायन के माध्यम से आध्यात्मिक ऊँचाइयों को केवल तभी प्राप्त किया जा सकता है जब आप एक मुक्त वातावरण में उन्मुक्त रूप से गाते हैं। आपने कई बॉलीवुड फिल्मों के लिए भी कार्य किया है जिनमें पिंजर, मौसम, तनु वेड्स मनु जैसी प्रसिद्ध फिल्में शुमार है। दुर्भाग्यवश आज हमारे मध्य छोटे भाई प्यारेलाल बडाली नहीं है किन्तु आप दोनों की जोड़ी ने वर्ष 1992 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, तुलसी पुरस्कार 1998, 2003 में पंजाब संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार प्राप्त किया। वर्ष 2005 में श्री पूरनचंद को भारत सरकार द्वारा पद्मश्री पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

पण्डित विक्कू विनायकरम, चेन्नई - घटम

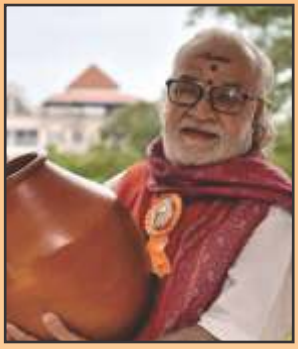

विश्वविख्यात घटम वादक श्री थित्ताकुडी हरिहर विनायकम जिन्हें हम विक्कू विनायकरम के नाम से जानते हैं का जन्म वर्ष 1942 में तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली में हुआ। आपके प्रथम गुरु आपके पिता ही थे जो स्वयं एक सुप्रसिद्ध वादक रहे हैं। अल्पायु में ही आपने तत्समय के दिग्गज कलाकारों के साथ और समक्ष वादन प्रस्तुतियाँ देकर उनकी सराहना एवं आशीष प्राप्त किया। आप अब तक देश एवं विदेशों में अनेक प्रस्तुतियाँ कर चुके हैं। आपने घटम को एक मुख्य ताल वाद्य के रूप में स्थापित कर वर्ष 2002 में पद्मश्री एवं संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित ग्रैमी अवार्ड भी प्राप्त कर चुके हैं। आप अपने पुत्र सेल्वागणेश एवं पौत्र स्वामीनाथन के साथ 3डी नामक ताल वाद्यवृंद के माध्यम से तीन पीढ़ियों के कलाकारों के वादन की विभिन्नताओं में छुपी परम्परा की एकरूपता को लोगों तक प्रस्तुत कर रहे हैं। आपने संस्कृत के श्लोकों को लोगों को विभिन्न तालों और आवर्तनों में निबद्धकर उन्हें मनोरंजक रूप में लोगों के बीच पहुँचाया है। वर्तमान समय में आप अपने पिता द्वारा स्थापित श्री जय गणेश तालवाद्य विद्यालय, चेन्नई के प्रधानाध्यापक के तौर पर कार्य कर विभिन्न विद्यार्थियों विशेषकर वे प्रतिभाशाली विद्यार्थी जो अधिक साधन सम्पन्न परिवार से नहीं आते हैं, उन्हें संगीत शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। आपके संगीत विद्यालय के कई छात्रों ने संगीत जगत में अपना नाम रोशन किया है।

उदय भवालकर, पुणे - ध्रुपद गायन

वर्ष 1966 में मध्यप्रदेश में जन्मे पण्डित उदय भवालकर का जन्म एक संगीत प्रेमी परिवार में हुआ। शास्त्रीय संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा आपने अपनी बड़ी बहन एवं माधव संगीत महाविद्यालय ग्वालियर से प्राप्त की। वर्ष 1981 में ध्रुपद केन्द्र भोपाल से ध्रुपद की शिक्षा का विधिवत आरम्भ हुआ। ध्रुपद गायकी की बारीकियाँ आपने मुम्बई में रहकर उस्ताद ज़िया फरीदुद्दीन डागर और सुप्रसिद्ध रुद्र वीणा वादक उस्ताद जिया मोहिउद्दीन नगर से सीखीं। वर्ष 1985 में भोपाल में पहली सार्वजनिक प्रस्तुती करने के पश्चात आपने आज तक देश एवं विदेशों के अनेक प्रतिष्ठित आयोजनों में भी सुरीली प्रस्तुतियाँ दी हैं जैसे तानसेन समारोह ग्वालियर, सवाई गंधर्व महोत्सव, पुणे, हर वल्लभ सम्मेलन जालंधर, सप्तक अहमदाबाद विवेकानंद जयंती कोलकाता इत्यादि। इसके साथ ही आपने आकाशवाणी और दूरदर्शन के साथ अनेक कला फिल्मों में भी गायकी की है। सन 1990 से आपने अपनी कला प्रस्तुतियों के माध्यम से ध्रुपद को स्थापित करने के लिए यूरोप, यूके, अमेरिका, केनेडा, अफ्रीका, सिंगापुर, इजरायल, मेक्सिको, जापान, नेपाल एवं बांग्लादेश आदि अनेक देशों में संगीतिक यात्राएँ सम्पन्न की। मध्यप्रदेश शासन द्वारा आपको वर्ष 2001 में राष्ट्रीय कुमार गंधर्व सम्मान एवं वर्ष 2006 में दिल्ली की ओर से रजा पुरस्कार आदि सामानों से भी अलंकृत किया गया है। सार्वजनिक मंचों पर प्रस्तुतियाँ करने के साथ ही आप युवा पीढ़ी तक इस विधा को पहुँचाने हेतु आईटीसी संगीत रिसर्च अकेडमी कोलकाता, बंगाल संगीत परम्परा ढाका एवं आवर्तन गुरुकुल पुणे में ध्रुपद गायकी का प्रशिक्षण प्रदान कर निरन्तर अपना योगदान कर रहे हैं।

नीलाद्रि कुमार, मुम्बई - सितार

पण्डित नीलाद्रि कुमार का जन्म प्रसिद्ध सितार वादक पण्डित रविशंकर के सुप्रसिद्ध शिष्य पण्डित कार्तिक कुमार के यहाँ हुआ। पिता के ही सान्निध्य में चार साल की उम्र से सितार वादन का प्रशिक्षण प्राप्त कर मात्र छह साल की उम्र में पांडिचेरी के श्री अरबिंदो आश्रम में आपने पहला सार्वजनिक प्रदर्शन किया। मंच पर एकल प्रदर्शन के अलावा आप कई सुप्रसिद्ध कलाकारों के साथ जुगलबंदी भी प्रस्तुत कर चुके हैं। आपने सितार वादन के तकनीकी पक्ष पर बारीकी से काम किया है जैसे तारों की संख्या बीस से घटाकर पाँच की और भीतर एक इलेक्ट्रिक पिकअप जोड़कर गिटार की तरह तेज ध्वनि करने वाला एक नया वाद्ययंत्र बनाया जिसे आपने ज़िटार नाम दिया। इसी वाद्ययंत्र पर आपने अपना पहला पूर्ण एलबम वर्ष 2008 में जारी किया था। आपने उस्ताद जाकिर हुसैन के साथ मास्टर ऑफ द पर्कशन टूर में भी प्रतिभागीता की और जॉन मैक्लॉफलिन जैसे विश्व प्रसिद्ध कलाकारों के साथ भी काम किया। वर्ष 2007 में आपको संगीत नाटक अकादमी द्वारा उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ युवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आपके द्वारा बंटी और बबली के गीत `चुप चुप के' में किए गए सितार वादन के अंशों को काफी लोकप्रियता हासिल हुई। इसके अलावा आपने अनेक बॉलीवुड फिल्मों में भी सितार वादन किया है। वर्ष 2018 में आपको मिर्ची म्यूजिक अवार्ड द्वारा अपकमिंग म्यूजिक कंपोजर ऑफ द ईयर चुना गया एवं 2019 के 64 वें फिल्मफेयर अवार्ड में आपको आर.डी. बर्मन अवॉर्ड फॉर अपकमिंग टैलेंट इन फिल्म म्यूजिक अवार्ड से भी अलंकृत किया गया।

तेजस विंचूरकर एवं मिताली खरगोणकर, मुम्बई-बाँसुरी-तबला जुगलबंदी

सुप्रसिद्ध कलाकार श्री विलास खरगोणकर के यहाँ पुत्री रत्न के रूप में जन्मी मिताली खरगोणकर के पहले गुरु उनके पिता ही थे। मिताली का परिवार उस्ताद जहाँगीर खान साहब की परम्परा से ताल्लुक रखता है। तबला वादन की एकल प्रस्तुतियाँ करने के अलावा आप शास्त्रीय गायन, कथक प्रस्तुति इत्यादि में भी समय-समय पर देश एवं विदेश में कई ख्याति प्राप्त कलाकारों के साथ संगत करती आ रही हैं। आपने बहुत कम आयु में ही भारत सरकार से तबला वादन के लिए कई प्रतिष्ठित पुरस्कार एवं स्कॉलरशिप प्राप्त की है। आप शासकीय संगीत महाविद्यालय इंदौर में तबला की प्राध्यापक भी रह चुकी हैं। शास्त्रीय संगीत विधा के अलावा आप फ्यूजन, गजल और बॉलीवुड के लिए भी कई बार प्रस्तुति कर चुकी हैं।

तेजस विंचुरकर का जन्म ऐसे परिवार में हुआ जहाँ उनके दादाजी स्वर्गीय पण्डित पुरुषोत्तम विंचुरकर ग्वालियर घराने के एक ख्याति प्राप्त शास्त्रीय गायक थे। बाँसुरी में अत्यधिक रुचि होने से स्वर्गीय पण्डित रवि गरुड़ से आपने बाँसुरी वादन की विधिवत शिक्षा प्राप्त की। वर्तमान में आप श्री अजय फगरे भोपाल से बाँसुरी वादन की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। बाँसुरी वादन हेतु आपको कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जा चुका है एवं आप कई संगीत प्रतियोगिताओं के विजेता भी रहे हैं, जैसे आकाशवाणी द्वारा आयोजित संगीत प्रतियोगिता एवं सहारा बाँसुरी सहारा लूट फेस्टिवल। आपने कई फिल्मों हेतु बाँसुरी वादन किया है और कई प्रसिद्ध टीवी कार्यक्रमों जैसे एमटीवी अनप्लग्ड, ज़ी सारेगामा, इंडियन आइडल आदि पर आप एक जाना पहचाना चेहरा हैं।

मनोज सराफ, इंदौर-ध्रुपद गायन

रायपुर में जन्मे मनोज सराफ ने उज्जैन में श्री मोहन शुक्ला के सानिध्य में संगीत की शिक्षा प्राप्त की। तत्पश्चात सौभाग्यवश ध्रुपद गायकी में प्रशिक्षण हेतु आपको भोपाल में उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत अकादमी से स्कॉलरशिप प्राप्त हुई। आपने सुप्रसिद्ध और महान ध्रुपद एवं शास्त्रीय गायक उस्ताद जिया फरीदुद्दीन डागर से चार वर्षों तक ध्रुपद गायकी की विधिवत भी शिक्षा प्राप्त की। गुरु के ही साथ ही आपको विश्वख्याति प्राप्त रुद्रवीणा वादक स्वर्गीय उस्ताद ज़िया मोइनुद्दीन डागर के सानिध्य में रहकर संगीत गायन एवं वादन की कई बारीकियों को जानने एवं समझने का अवसर भी प्राप्त हुआ। आलाप, जोड़ और राग की क्रमबद्ध बढ़त पर जोर देने के साथ आप डागरबानी शैली में ध्रुपद गायकी में पारंगत हैं। आपको भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय की ओर से राष्ट्रीय स्कॉलरशिप भी प्रदान की गई है। आपने भारत के अनेक लब्धप्रतिष्ठित कार्यक्रमों जैसे ध्रुपद समारोह भोपाल, ध्रुपद मेला बनारस एवं तानसेन समारोह ग्वालियर में प्रस्तुतियाँ दी हैं। आपने जीवनसंगिनी श्रीमती सुलभा चौरसिया सराफ जोकि स्वयं एक ध्रुपद गायिका हैं, के साथ नीरज कवि द्वारा निर्देशित नाटक शेक्सपियर्स हैमलेट में संगीत निर्देशन भी किया है एवं एनडीटीवी चैनल पर प्रसारित कार्यक्रम इंडिया मैटर्स के लिए गायन भी किया है। वर्तमान में आप मंच प्रस्तुतियों के अलावा इंदौर में ध्रुपद प्रशिक्षण में भी संलग्न है। आपने अपनी जीवनसंगिनी के साथ कई ऐसी प्रस्तुतियाँ दी हैं जो कि शायद ध्रुपद के इतिहास में महिला पुरुष जुगलबंदी की निराली मिसाल हैं।

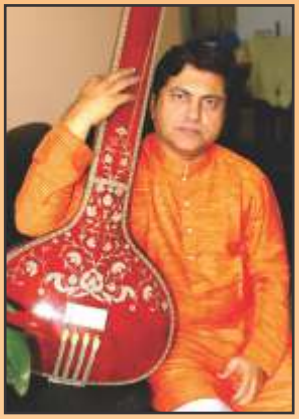

पाब्लो, ब्राजील-विश्वसंगीत

शिक्षक, चिकित्सक किन्तु मूलत: एक संगीतकार के रूप में पाब्लो जी अपना जीवन दुनिया भर की विभिन्न संगीत परम्पराओं एवं विविधताओं में व्याप्त समानता पर शोध के लिए समर्पित कर दिया है। ब्राजील में चिलियन मूल के माता-पिता के यहाँ जन्मे पाब्लो ने अपनी लैटिन अमेरिकी संगीत विरासत और समृद्ध पुर्तगाली-अफ्रीकी-ब्राजीलियन संस्कृति दोनों को अवशोषित कर कम उम्र से सामान्य पश्चिमी शास्त्रीय संगीत का प्रशिक्षण प्राप्त करना शुरू किया। रियो डी जेनेरो विश्वविद्यालय से संगीत में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के पश्चात आपने वाराणसी में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का अध्ययन किया। विश्वभर के आध्यात्मिक संगीत के माध्यम से एकता की मिसाल प्रस्तुत करने हेतु आप प्लेनेटरी सोल नामक संगीत की एक इंटरएक्टिव यात्रा अंतर्गत दुनिया भर का दौरा किया है। वर्तमान में आप गोवा में निवासरत है जहाँ आप अपने नए शो लैटिन अमेरिकन सोल के माध्यम से स्वयं की जड़ों के साथ पुन: जुड़कर उस महाद्वीप की कीमती धुनों को प्रस्तुतीकरण हेतु शास्त्रीय प्रारूप में व्यवस्थित कर रहे हैं।

संजय गरूड़, पुणे-गायन

संजय गरुड़ का जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ जहाँ पिछली तीन पीढ़ियों से उनके परिवार का लगाव संगीत से रहा है। उनके दादाजी श्री मारुति गरुड़ एक सुप्रसिद्ध तबला एवं पखावज वादक रहे हैं। श्री संजय गरुड़ ने मात्र नौ वर्ष की अल्पायु में ही मधुर और सुरीली आवाज में भजन गाकर अपनी सांगीतिक प्रतिभा का परिचय दे दिया था। संगीत के प्रति इस घनिष्ठ लगाव का प्रतिफल आपको गुरु पण्डित श्रीकांत देशपाण्डे के रूप में मिला जोकि भारत रत्न पण्डित भीमसेन जोशी के शिष्य होने के साथ महान शास्त्रीय गायक सवाई गंधर्व के पोते भी थे। आपने अपने गुरु से संगीत की विधिवत शिक्षा प्राप्त की और आज भी किराना घराना की प्रसिद्ध और समृद्धिशाली गायकी परम्परा को आप आगे ले जा रहे हैं। किराना घराना का अगर उद्भव देखा जाए तो ऐसा कहा जा सकता है कि उस्ताद अब्दुल करीम खान साहेब द्वारा इस घराने की परम्परा को स्थापित किया गया तथा सवाई गंधर्व और भारत रत्न पण्डित भीमसेन जोशी जैसे उत्कृष्ट गायकों द्वारा इस परम्परा का सफलतापूर्वक निर्वहन किया गया। श्री संजय गरुड़ ने शास्त्रीय संगीत में खयाल और ठुमरी गायकी के अलावा भजन गायन में भी अपना अलग स्थान बनाया है। आपने कई प्रतिष्ठित कार्यक्रमों जैसे सवाई गंधर्व भीमसेन संगीत महोत्सव पुणे, सवाई गंधर्व संगीत महोत्सव कर्नाटक, संकल्प संगीत महोत्सव अहमदाबाद, गुंजन संगीत कंसर्ट इंदौर, पण्डित जितेंद्र अभिषेकी महोत्सव गोवा आदि में सफलतापूर्वक प्रस्तुतियाँ देकर दर्शकों की प्रशंसा अर्जित की है।

भारत भूषण गोस्वामी, दिल्ली-सारंगी

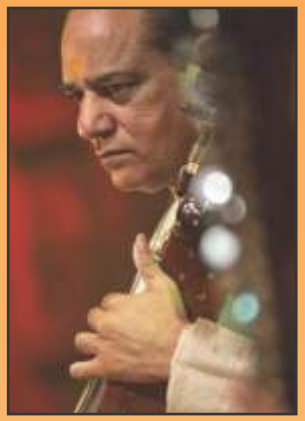

भारत के शास्त्रीय संगीत के मण्डल के क्षितिज पर चमकने वाले सितारों में से एक पण्डित भारत भूषण गोस्वामी का जन्म 25 दिसम्बर1955 में हुआ था। आपके दादाजी पण्डित अनमोल चंद गोस्वामी बरसाना के राधारानी मंदिर से संबंधित पारम्परिक ह्वेली संगीत के सुप्रसिद्ध गायक थे। आपकी संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा दीक्षा भी दादा जी के सानिध्य में ही प्राप्त हुई। उसके बाद आपका रुझान सारंगी वादन की तरफ हुआ और पण्डित कन्हैया लाल मथुरा वाले से आपने कुछ समय प्रशिक्षण भी प्राप्त किया। आपको बनारस घराना के सुप्रसिद्ध सारंगी वादक स्वर्गीय पण्डित हनुमान प्रसाद मिश्रा के सानिध्य में सारंगी प्रशिक्षण प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनसे प्रशिक्षण ग्रहण करने के बाद आपने पद्मभूषण पण्डित राजन-साजन मिश्र से भी मार्गदर्शन प्राप्त किया। सारंगी वादन में आप राग के विस्तार में निपुण हैं और सारंगी वादन के दौरान तान की बारीकियों को बहुत ही सुरीले अंदाज में प्रस्तुत करना आपकी खासियत है। आपने देश और विदेश के प्रतिष्ठित संगीत कार्यक्रमों में कई एकल प्रस्तुतियाँ दी हैं एवं आप कई कार्यक्रमों में संगत भी कर चुके हैं। आप आकाशवाणी दिल्ली में बतौर कलाकार कार्यरत हैं एवं आकाशवाणी के टॉप ग्रेड कलाकार भी हैं। साथ ही आपने भारतीय सांस्कृतिक संबद्ध परिषद के माध्यम से कई प्रस्तुतियाँ भी दी हैं। मध्य प्रदेश सरकार द्वारा आपको लतीफ खान सम्मान से भी अलंकृत किया जा चुका है। आपके द्वारा बांग्लादेश और पाकिस्तान में सार्क सम्मेलन, भारतीय दूतावास द्वारा आयोजित काठमांडू संगीत उत्सव, सारंगी महोत्सव अहमदाबाद, ध्रुपद समारोह वृंदावन, घराना फेस्टिवल दिल्ली, जैसे अनेक कार्यक्रमों में प्रस्तुतियों से दर्शक अभिभूत हुए हैं।

देसिएर्तो आनदंते, अर्जेन्टीना - विश्वसंगीत

मूलत: लैटिन मूल के देसिएर्तो आनदंते का जन्म अर्जेंटीना में हुआ था। आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी कलाकार हैं। आपने ब्यूनोज़ायर्स विश्वविद्यालय से लगभग नौ वर्षों तक शास्त्रीय गिटार वादन का प्रशिक्षण प्राप्त किया। तत्पश्चात आपने कई लैटिन अमेरिकी देशों की यात्रा सम्पन्न की जिसके दौरान आप में संगीत के अलावा सर्कस एवं अन्य प्रदर्शनकारी प्रतिभाएँ भी विकसित हुईं। गिटार के प्रति आपके लगाव के चलते आपने जापान, बॅन्गाकोंग, इंडोनेशिया, मलेशिया और थाईलैंड जैसे स्थानों पर लगभग पाँच साल व्यतीत किए। विभिन्न सांस्कृतिक परिवेशों में रहने और उनके संगीत और कलाकारों को पास से देखने, सुनने और समझने के परिणामस्वरूप आपकी संगीत प्रतिभा शास्त्रीयता के साथ जैज़, कैरेबियन, सालसा, सांबा, बोलेरो, बेसानोवा आदि शैलियों की एक अनोखी सांगीतिक रंगोली के रूप विकसित हुई। आपके गिटार से निकला संगीत जोशीला है एवं आप की आवाज में लैटिन अमेरिका की भावपूर्ण लयात्मकता भी है। वर्तमान में आप माबोलेना नामक एक बैंड के अंतर्गत भारत में गोवा एवं अन्य स्थानों पर लैटिन दोनों को देसी रंग देने का प्रयास कर रहे हैं।

पण्डित अभय नारायण मलिक एवं साथी, दिल्ली - ध्रुपद गायन

पण्डित अभय नारायण मलिक लगभग 300 वर्ष पुरानी स्वामी हरिदास और तानसेन जी भी परम्परा का निर्वाह करने वाले संगीतकारों की श्रृंखला के ध्रुपद गायक हैं। वर्ष 1937 में बिहार के दरभंगा जिले के पारंपरिक रूप से ध्रुपद गायकी करने वाले ब्राह्मण परिवार में जन्मे पण्डित मलिक ने दरभंगा के राजा बहादुर विश्वेश्वर सिंह के संरक्षण गुरु शिष्य परम्परा से शास्त्रीय संगीत की विधिवत शिक्षा गुरु स्वर्गीय पद्मश्री पण्डित राम चतुर मलिक से चौदह वर्ष की आयु में प्राप्त करनी शुरू की। ध्रुपद-धमार गायक परम्परा के आप ऐसे निराले कलाकार हैं जिन्होंने तानसेन द्वारा रचित अल्पज्ञात बंदिशों को संजोकर रखा एवं प्रस्तुत किया है। आपकी मूर्धन्य प्रतिभा को भारत सरकार एवं विदेशों में भी पुरस्कारों के रूप में सराहा गया जिनमें प्रमुख हैं संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, मिथिला विभूति, मिथिला रत्न, संगीत का भारत रत्न, चाँद खान पुरस्कार, ध्रुपद रत्न पुरस्कार आदि। आप कई प्रतिष्ठित संगीत पुरस्कारों के निर्णायक एवं ज्यूरी मेम्बर भी रहे हैं। आप वर्ष 1992 से आकाशवाणी के टॉप ग्रेड कलाकार रहे हैं। आपने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रतिष्ठित कंपनियों के साथ संगीत रिकॉर्ड किया है। इसके साथ ही फ्रेंच कंपनी के द्वारा भी एक सीडी जारी की गई जिसे यूनेस्को द्वारा प्रसारित किया गया जिसे पाकिस्तानी सरकार के निवेदन पर उन्हें भी प्रदान किया गया। वर्तमान में पण्डित जी उन वरिष्ठ गायकों में से हैं जिन्होंने कला के प्रति समर्पण से ध्रुपद-धमार जैसी गायकी को निखार कर उसे लोगों के बीच स्थापित कर परम्परा को यथोचित सम्मान दिलवाया।

पण्डित भजन सोपोरी, दिल्ली - संतूर

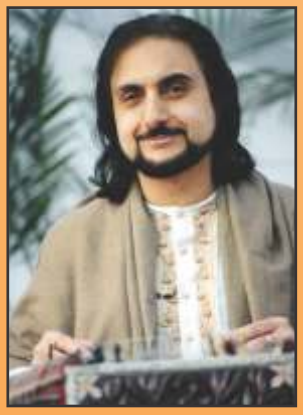

विश्वविख्यात संतूर वादक पण्डित भजन सोपोरी का जन्म कश्मीर के लगभग 300 वर्ष प्राचीन सोपोरी सूफिया घराने के एक सांगीतिक परिवार में हुआ। आप की प्रारम्भिक शिक्षा दादाजी पण्डित संसारचंद्र सोपोरी और बाद में पिता पण्डित शंभूनाथ सोपोरी के सान्निध्य में हुई। आप वह कलाकार हैं जिन्होंने अपने संगीत कार्यक्रमों में संतूर पर भारतीय शास्त्रीय संगीत को प्रदर्शित कर राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संतूर एकल वादन के रूप में प्रचलित किया। आप देश की विभिन्न भाषाओं में लगभग 6000 गीतों की संगीत रचना करने वाले तथा विदेशी भाषाओं जैसे फारसी, अरबी आदि पर कार्य करने वाली देश की एक मात्र संगीतकार हैं। आपकी वादन शैली अप्रतिम और अत्यंत प्रभावी है जिसमें आपने गायकी एवं तंत्रकारी के समस्त अंगों को सुनियोजित ढंग से संजोकर शास्त्रीय संगीत की बारीकियों जैसे मीड़, ग्लाइड, गमक, बोल के साथ ध्रुपद अंग को भी परवाज़ के साथ प्रदर्शित किया है। संगीत वादन के अलावा आपने नाद एवं ध्वनि चिकित्सा पर गहन अनुसंधान किया है। संगीत जगत में अद्वितीय योगदान के लिए आपको अनेक सम्मानों से विभूषित किया गया जिनमें पद्मश्री, केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, जम्मू कश्मीर सरकार द्वारा प्रदत्त राज्य का लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड, जम्मू कश्मीर राज्य का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार, मध्य प्रदेश सरकार द्वारा प्रदत्त उस्ताद रशीद खान राष्ट्रीय सम्मान आदि प्रमुख हैं। संगीत एवं संस्कृति के क्षेत्र में आपके महत्वपूर्ण एवं अतुलनीय योगदान को देखते हुए वर्ष 2011 में भारत सरकार के डाक संचार विभाग ने आप पर रुपये पाँच का एक डाक टिकट भी जारी किया।

राहुल देशपाण्डे, मुम्बई- गायन

राहुल देशपाण्डे का जन्म 1979 को जाने-माने संगीतकारों के परिवार में हुआ था। आपके दादा श्री वसंतराव देशपाण्डे एक ख्यातिप्राप्त गायक थे। बचपन से ही कुमार गंधर्व की गायन शैली सुनकर संगीत की ओर आपका रुझान अधिक हुआ। संगीत में आपकी प्रारम्भिक शिक्षा पण्डित गंगाधर पिंपलीखरे और डॉक्टर मधुसूदन पटवर्धन के मार्गदर्शन में हुई। उसके पश्चात आपने श्रीमती उषा ताई चिपलकट्टी और पण्डित मुकुल शिवपुत्र के सानिध्य में भी अपनी संगीत एक प्रतिभा को निखारा। ख्याल, ध्रुपद, ठुमरी, कजरी, होरी, टप्पा, गजल, अभंग, भजन, भावगीत एवं नाट्य संगीत में आपको महारत हासिल है। शास्त्रीय संगीत को आपने यथासम्भव हर मंच पर प्रसिद्धि दिलाने का प्रयास किया है। आपने जी मराठी पर प्रसारित होने वाले प्रसिद्ध कार्यक्रम `सा रे गा मा पा' लिटिल चेम्प और और जी युवा चैनल पर संगीत सम्राट परवाज आदि कार्यक्रमों में भी बतौर जज कार्य किया है। हर वर्ष आप अपने दादा गुरु स्वर्गीय पण्डित वसंतराव देशपाण्डे की स्मृति में वसंतोत्सव संगीत समारोह का आयोजन भी करते हैं। नाट्यसंगीत की ओर भी आपका बहुत रुझान रहा है। कट्यार कलजात घुसली नामक नाट्य संगीत में आपके कार्य को बहुत सराहा गया। आपको कई प्रतिष्ठित सम्मानों से भी अलंकृत किया जा चुका है जिनमें युवा संगीतकारों के उल्लेखनीय योगदान हेतु सुधीर फड़के पुरस्कार, वर्ष 2012 में मास्टर दीनानाथ मंगेशकर पुरस्कार, सवाई गंधर्व संगीत उत्सव में रसिकग्रहणी दत्तोपंत देशपाण्डे पुरस्कार आदि उल्लेखनीय हैं।

पण्डित अनिन्दो चटर्जी एवं अनुवृत चटर्जी, कोलकाता-तबला युगल

पण्डित अनिंदो चटर्जी फर्रुखाबाद घराना के तबला वादक एवं सुप्रसिद्ध तबला वादक पण्डित ज्ञान प्रकाश के घोष के शिष्य हैं। आपने अपने चाचा पण्डित विश्वनाथ चैटर्जी से प्रेरित होकर मात्र पाँच साल की उम्र में तबला वादन प्रारम्भ किया। प्रारम्भिक तबला वादन का प्रशिक्षण लखनऊ घराने के उस्ताद अफाक हुसैन खाँ से प्राप्त कर आप पण्डित ज्ञान प्रकाश घोष के मार्गदर्शन में लगभग तीन दशकों तक प्रशिक्षण प्राप्त करते रहे हैं। आपने कई लब्धप्रतिष्ठित संगीतकारों जैसे निखिल बनर्जी, रईस खान, पण्डित रविशंकर, शाहिद परवेज, गंगूबाई हंगल, प्रसिद्ध सरोद वादक अली अकबर खाँ आदि के साथ काम किया है। आपको वर्ष 1970 में प्रतिष्ठित राष्ट्रपति पुरस्कार एवं वर्ष 2002 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ।

अनुवृत चटर्जी सुप्रसिद्ध तबला वादक पण्डित अनिंदो चटर्जी के पुत्र हैं। आपको 1992 में महान गुरु पद्मभूषण पण्डित ज्ञानप्रकाश घोष के सबसे छोटे और अन्तिम गंडा बन्ध शिष्य होने का दुर्लभ सौभाग्य प्राप्त हुआ। तत्पश्चात आपने फर्रुखाबाद घराने की परम्परा के साथ लखनऊ घराना का भी प्रशिक्षण प्राप्त किया। वर्ष 2012 में आपको तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह के समक्ष प्रदर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आप घराने की परम्परा की गहराई समझने के साथ ही कला के समकालीन होने की आवश्यकता को भी समझते हैं। आप फ्यूजन बैंड का भी हिस्सा रहे हैं एवं शंकर महादेवन, रंजीत बरोट, इराक के प्रसिद्ध रहीम अलहाज आदि के साथ मंच भी साझा किया है। आपको तबला वादन हेतु राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं।

अश्विनी भिड़े देशपाण्डे, मुम्बई - गायन

जयपुर अतरौली घराने की सुपरिचित हस्ताक्षर सुश्री अश्विनी भिड़े देशपाण्डे का नाम शायद हर कलारसिक को कंठस्थ होगा। आपका जन्म एक संगीत प्रेमी परिवार में हुआ एवं मात्र सोलह वर्ष की अल्पायु में आपने गंधर्व महाविद्यालय से संगीत विशारद की डिग्री पूर्ण की और वर्ष 1977 में आकाशवाणी संगीत प्रतियोगिता जीतकर राष्ट्रपति स्वर्ण पदक प्राप्त किया। स्व. पण्डित नारायण राव दतार के सान्निध्य में आपने संगीत के मूल को समझा एवं माता एवं गुरु श्रीमती माणिक भिड़े के कठोर अनुशासन एवं मार्गदर्शन में रहकर जयपुर गायकी के सभी पारम्परिक पक्षों का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त किया। भारतीय शास्त्रीय संगीत की समृद्ध परम्परा में आपने जयपुर अतरौली खयाल गायकी परम्परा को हमेशा आत्मीयता से निभाते हुए श्रोताओं से देश एवं विदेश में अपना एक अलग स्थान स्थापित किया है। आप सरलता से ठुमरी, दादरा, भजन और अभंग गाने के साथ संस्कृत के स्त्रोत एवं स्तुति गायन भी करती हैं। इसके अलावा आपने वर्ष 2004 में संगीत पर आधारित पुस्तक रागरचनांजलि का लेखन भी किया जिसे विश्वभर से समीक्षकों एवं पाठकों की सराहना प्राप्त हुई। भारतीय शास्त्रीय संगीत को के प्रति आपके योगदान को सरकार एवं अन्य संगीत प्रेमियों द्वारा कई पुरस्कारों के रूप में सराहा गया है जिनमें वर्ष 2014 में प्रदत संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, वर्ष 2005 में मध्यप्रदेश सरकार द्वारा प्रदत राष्ट्रीय कुमार गंधर्व सम्मान, महाराष्ट्र सरकार द्वारा वर्ष 2011 में सांस्कृतिक पुरस्कार आदि प्रमुख हैं।

मार्टिन डबॉइस, फ्रांस - विश्वसंगीत

मार्टिन डबॉइस बहुप्रतिभाशाली संगीतकार हैं जो ताल वाद्य के अलावा कोरा, बाँसुरी एवं गायन भी करते हैं। आपने मात्र नौ वर्ष की आयु में संगीत यात्रा आरम्भ की और अनेक विश्वविख्यात एवं जैज़ के संगीतकारों से प्रशिक्षण प्राप्त कर उनकी विभिन्न शैलियों को अपनी प्रतिभा में आत्मसात किया है। आप फ्रांस में निवासरत हैं और कई अंतर्राष्ट्रीय फ्यूजन ग्रुप के साथ अनेक संगीत समारोह में प्रस्तुतियाँ कर चुके हैं। पिछले पच्चीस वर्षों से आपने जैज़ के अलावा अफ्रीकी संगीत, लोक संगीत, रागी आदि विभिन्न शैलियों को अपने वादन के द्वारा प्रस्तुत किया है। वर्तमान में आप भारत में प्रवास के दौरान स्वयं को भारतीय संगीत परम्परा से समृद्ध कर कई भारतीय कलाकारों के साथ प्रस्तुतियाँ भी करते हैं।

तृप्ति कुलकर्णी, इंदौर-गायन

युवा गायिका तृप्ति कुलकर्णी का जन्म नासिक में हुआ था। आपने अल्पायु में संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा श्रीमती मंगला ताई सुर्वे जी से प्राप्त की एवं तत्पश्चात श्री सुनील मसूरकर जी एवं श्री सुधाकर देवले जी के सानिध्य में भी गायकी का प्रशिक्षण प्राप्त किया। शास्त्रीय संगीत की विद परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने के पश्चात आपने इंदौर के देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के कला संकाय से कंठ संगीत में एम ए में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। साथ ही संगीत की नेट परीक्षा भी उत्तीर्ण की। आपको मध्य प्रदेश के युवा उत्सव में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ एवं माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी ने स्वयं आपको पुरस्कृत किया। अरिहंत महाराष्ट्र मण्डल नई दिल्ली की शास्त्रीय संगीत प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पाना भी आपकी उपलब्धि है। आपने भारत के अनेक प्रतिष्ठित संगीत समारोहों में गायन प्रस्तुत किया है जिनमें वर्ष 2015 में श्रवन उत्सव उज्जैन, वर्ष 2017 में उत्तराधिकार भोपाल, वर्ष 2021 में उस्ताद अलाउद्दीन खान संगीत एवं कला अकादमी द्वारा आयोजित गमक इत्यादि समारोह शामिल है। आपके द्वारा अर्जित पुरस्कारों की श्रृंखला में शंकर महादेवन अकादमी द्वारा आयोजित अखिल भारतीय शास्त्रीय संगीत प्रतियोगिता का प्रथम स्थान भी शामिल है। वर्तमान में आप शासकीय संगीत महाविद्यालय इंदौर में शास्त्रीय गायन की सहायक व्याख्याता के पद पर कार्यरत हैं। गुनीजनों का सान्निध्य और गुरु के आशीर्वाद से पोषित प्रतिभा के माध्यम से आप कई मंचों पर प्रदर्शन कर अपना संगीत के प्रति संकल्प पूरा करती आ रही हैं।

सुधा रघुरामन, दिल्ली-कर्नाटक संगीत

पारम्परिक कर्नाटक शैली संगीत के प्रति निष्ठाबद्ध परिवार में जन्मीं श्री सुधा रघुरामन के प्रथम गुरु उनके पिता स्वर्गीय श्री ओ.एस. श्रीधर थे। संगीत की बारीकियाँ सीखने के लिए आपको अपने दादा जी संगीत भूषणम् स्वर्गीय श्री ओ.वी. सुब्रमण्यम का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। आपने वायलिन वादन का प्रशिक्षण प्रसिद्ध गुरु स्वर्गीय वी. जानकी रमन से प्राप्त किया है। आपने भारतवर्ष के अनेक प्रसिद्ध समारोह जैसे विष्णु दिगम्बर जैन फेस्टिवल, तानसेन समारोह, नादनीरजनम, कुमार गंधर्व संगीत समारोह, मॉरीशस तमिल संगम, इंदिरा गांधी स्मृति समारोह, संगीत नाटक अकादमी संगीत समारोह आदि में प्रस्तुतियाँ दीं। आपने अब तक लगभग ढाई सौ से अधिक कर्नाटक शैली के गीतों को रिकॉर्ड किया है। उत्तर भारत में अधिक समय तक प्रवास करने के कारण आपका रुझान हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की तरफ भी रहा। आपको अनेक देशों जैसे मॉरीशस, कैनेडा, ऑस्ट्रेलिया, यूएसए आदि में संगीत पर आधारित कार्यशालाओं में भी आमंत्रित किया गया है। नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रमंडल खेलों के उद्घाटन सत्र में आपने कई शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुतियों हेतु संगीत भी तैयार किया जिसके लिए आपको षणमुखानंद संगीत सभा द्वारा दिल्ली युवा कलाकार पुरस्कार एवं हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा चित्रकला सम्मान से भी सम्मानित किया गया। आप आकाशवाणी की 'ए ग्रेड' की कलाकार हैं एवं अनेक आकाशवाणी संगीत सम्मेलनों में भी प्रस्तुति कर चुकी हैं। आपको संगीत नाटक अकादमी द्वारा उस्ताद बिस्मिल्लाह खान पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है।

राहुल-रोहित मिश्रा, वाराणसी-गायन युगल

राहुल मिश्रा और रोहित मिश्रा का ताल्लुक बनारस घराना से है। आपके दादा जी बनारस घराने के सुप्रसिद्ध हस्ताक्षर स्वर्गीय पण्डित बैजनाथ प्रसाद मिश्रा थे। आप दोनों के पिता श्री पण्डित त्रिलोकी नाथ मिश्रा हैं एवं महान गायिका पद्मविभूषण स्वर्गीय गिरजा देवी के आप गंडा बन्द शिष्य रहे हैं। आप दोनों ही भारतीय शास्त्रीय गायन की हर उस विधा में प्रशिक्षण प्राप्त हैं जोकि बनारस घराने की परम्परा का प्रतिनिधित्व करती हैं जैसे खयाल, ठुमरी, टप्पा, दादरा, चैती, होरी, भजन आदि। आप दोनों ही प्रयाग संगीत समिति, प्रयागराज से संगीत में स्नातक है एवं संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रदत स्कालरशिप भी प्राप्त कर चुके हैं। विशुद्ध शास्त्रीय परम्परा का निर्वहन करने के साथ आप दोनों ने वर्ष 2014 में यूएसए के प्रसिद्ध गायक एवं गीतलेखक के साथ हंगामा म्यूजिक द्वारा जारी की गई फ्यूजन एलबम देश परदेश में भी काम कर चुके हैं। एक जोड़ी के तौर पर आप दोनों की संगीत प्रस्तुतियों में जहाँ बनारस घराने की परम्परा एवं विविधता झलकती है, वहीं दूसरी ओर आप अन्य युवा कलाकारों की भाँति अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा कर राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय श्रोताओं में अपना विशेष स्थान अर्जित किया है। आप दोनों ने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर अनेक प्रस्तुतियाँ दी हैं जिनमें से मुख्य हैं संकट मोचन संगीत समारोह वाराणसी, श्रीमद् उत्सव जोधपुर, सिंहस्थ उत्सव उज्जैन, कृष्ण वारसा- कृष्णा ध्यान मंदिर पुणे, कालिदास समारोह, ठुमरी उत्सव-नई दिल्ली, आदि।

मैहर वाद्य वृन्द, मैहर-वाद्य वृन्द

प्रसिद्ध संगीत मनीषी उस्ताद अलाउद्दीन ख़ाँ साहब ने 1918 में मैहर रियासत के तत्कालीन राजा बृजनाथ सिंह जूदेव की प्रेरणा से मैहर वाद्यवृन्द की स्थापना की थी। भारतीय शास्त्रीय संगीत की परम्परा को बरकरार रखने में इस वाद्यवृन्द की महत्वपूर्ण भूमिका है। उस्ताद अलाउद्दीन खाँ साहब ने परम्परागत वाद्ययंत्रों के अलावा दुर्लभ वाद्ययंत्रों का भी समावेश इस वाद्यवृन्द में किया था जिसमें नलतरंग प्रमुख है। नलतरंग बंदूक की नालों को काटकर स्वरबद्ध करके एक नये शास्त्रीय वाद्य के रूप में निर्मित किया गया था। इस वाद्यवृन्द में सितार, इसराज, सरोद, वायलिन, चेलो, सितारबैंजों, नलतरंग, हारमोनियम और तबला आदि वाद्य हैं। इन वाद्यों के लिए उस्ताद अलाउद्दीन खाँ ने अलग-अलग रागों पर आधारित अनेकों रचनाएँ तैयार की थी। धरोहर के रूप में कलाकार पीढ़ी-दर-पीढ़ी इस वाद्य की परम्परा को संजोये चले आ रहे है। इस वाद्यवृन्द के कलाकारों द्वारा देश के प्रतिष्ठित संगीत समारो हों में शिरकत सफलतापूर्वक किया है एवं मध्यप्रदेश शासन संस्कृति विभाग द्वारा वर्ष 2016 में शिखर सम्मान से विभूषित किया गया है। वाद्यवृन्द को मध्यप्रदेश शासन संस्कृति विभाग द्वारा संरक्षण प्रदान किया गया है। बाबा कहा करते थे कि ऐसा शास्त्रीय वाद्यवृन्द पूरी पृथ्वी पर दूसरा नहीं है। कार्यक्रम डॉ. सुनील भट्ट, बैण्ड प्रमुख के निर्देश में प्रस्तुत किया जावेगा।

कलाकारों के नाम वाद्यों सहित-

डॉ. सुनील भट्ट बैण्ड प्रमुख (पखावज), श्री सुरेश कुमार चतुर्वेदी (इसराज), श्री जी.पी. पाण्डेय उत्तम (वायलिन), श्री गुणाकर सावले (हारमोनियम), डॉ. अशोक बढ़ोलिया (तबला), श्री रामसुमन चौरसिया (सितार), श्री कमल किशोर माहोर (तबला), श्री गौतम भारतीय (हारमोनियम), श्री सौरभ कुमार चौरसिया (नलतरंग), श्री बृजेश कुमार द्विवेदी (सरोद)

पण्डित सुरेश तलवलकर एवं साथी, पुणे- तबला

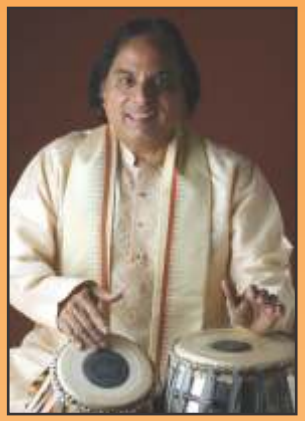

पण्डित पंढरीनाथ नागेशकर एवं पण्डित विनय राव यंगरेकर जैसे महान गुरुओं के सान्निध्य में तबला वादन की शिक्षा प्राप्त करने वाले श्री सुरेश तलवलकर आज अपनी विधा में एक जाना पहचाना नाम हैं। उनकी कला का सम्मान जहाँ सभी कलारसिक करते हैं वहीं उन्होंने अपनी कला को संवारने के लिए हर सम्भव प्रयास किया। आपने ख्यातिप्राप्त मृदंगम गुरु पण्डित रामानंद ईश्वरन जी से कर्नाटक ताल शास्त्र का ज्ञान अर्जित किया एवं हिन्दुस्तानी और कर्नाटक शैली में परस्पर संबंध स्थापित किया। आपका विश्वास है `संगीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीतमुच्यते'। आपने ताल यात्रा जैसा समृद्ध कार्यक्रम तैयार किया जहाँ तबला, पखावज, मृदंगम, पाश्चात्य ड्रम्स, हारमोनियम, बाँसुरी, सितार और कथक के लगभग बीस कलाकार एक मंच पर आकर अपनी कला के रंगों से एक चित्र बनाते हैं। आपकी प्रतिभा को पहचानते हुए समय-समय पर आपको 35 से अधिक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से अलंकृत किया जा चुका है जिनमें से वर्ष 2013 में पद्मश्री एवं संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार उल्लेखनीय है। आपने पखावज, सारंगी एवं हारमोनियम जैसे संगीत वाद्ययंत्रों के साथ तबला वादन की जुगलबंदी प्रस्तुत की है जिसमें समय-समय पर कठिन ताल जैसे भी दीपचंदी एवं आड़ाचौताल को भी सफलतापूर्वक अंदाज में दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत कर उनकी सराहना अर्जित की। आप पुणे स्थित गुरुकुल तालयोगी आश्रम में आज भी गुरु शिष्य परम्परा से तबला वादन का विधिवत पारम्परिक प्रशिक्षण दे रहे हैं।

अल्मुडेन डियाज़ ललानोस, स्पेन - विश्वसंगीत

अल्मुडेन डियास ललानोस स्पेन में मैड्रिड में जन्मीं एक पियानो वादक, गायिका और गीतकार हैं। आपने स्पेन के रॉयल कंजरवेटरी से पियानो में शास्त्रीय संगीत वादन का अध्ययन किया। तत्पश्चात आपने आगे की संगीत शिक्षा बर्कले कॉलेज ऑफ म्यूजिक से जारी रखी। आप शास्त्रीय संगीत के साथ-साथ जैज़, कथावाचन शैली और संगीत थियेटर से भी जुड़ी हुई हैं। पिछले दस वर्षों में आपने कई बैंड, टीवी कार्यक्रमों एवं फिल्मों हेतु संगीत दे चुकी हैं। गीतकार के रूप में आप एना मार्ले के नाम से संगीत प्रस्तुतियाँ देती हैं जो कथा वाचन संगीत नाटक कविता का अनोखा संगम रहता है।

शाश्वती मण्डल, दिल्ली- गायन

सुश्री शाश्वती मण्डल का जन्म एक संगीत प्रेमी परिवार में हुआ जहाँ बचपन से ही संगीत के प्रति उनकी संवेदनशीलता एवं रुचि को उनके परिवार ने समझा एवं सराहा। आप ग्वालियर घराने के प्रसिद्ध कलाकार एवं ग्वालियर राज्य के संगीतकार स्वर्गीय पण्डित बालाभाऊ उंडेकर की पोती हैं। संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा आपने अपनी माताजी स्वर्गीय कमल मण्डल के सानिध्य में प्राप्त की। तत्पश्चात वर्ष 1987 से 1992 तक आपको पण्डित बाला साहब पुँछवाले के सान्निध्य में टप्पा एवं खयाल गायकी के प्रशिक्षण हेतु भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय से राष्ट्रीय स्कॉलरशिप प्राप्त हुई। आपने विदुषी पूर्णिमा चौधरी एवं पण्डित मधुप मुद्गल से भी प्रशिक्षण प्राप्त किया। आपने अब तक कई प्रतिष्ठित संगीत समारोहों में शिरकत की है जिनमें सवाई गंधर्व समारोह पुणे, तानसेन संगीत समारोह ग्वालियर, सप्तक संगीत उत्सव अहमदाबाद, हब्बा संगीत उत्सव बेंगलुरु, शिवरात्रि महोत्सव वाराणसी, कुम्भ महोत्सव प्रयागराज, हरीवल्लभ महोत्सव जालंधर, स्वर सागर बेंगलुरु, ठुमरी टप्पा उत्सव मुम्बई, आदि प्रमुख हैं। इसके अलावा आपने संगीत प्रस्तुतियों हेतु विदेश यात्राएँ भी की हैं। इसके साथ ही आपने अपने गुरु स्वर्गीय पण्डित बाला साहब पूँछवाले के साथ एवं उनकी मृत्यु पश्चात अकेले ही भारत के विभिन्न भागों एवं विदेशों में संगीत कार्यशालाओं का आयोजन किया है। इसके अलावा आप आईटीसी द्वारा आर्टिस्ट ऑफ द मंथ भी घोषित की जा चुकी हैं।

देवोप्रिया एवं सुचिस्मिता, मुम्बई-बाँसुरी युगल

देबोप्रिया और सुचिस्मिता का जन्म इलाहाबाद में संगीतकारों के परिवार में हुआ एवं अपने माता-पिता के सान्निध्य में ही आप दोनों की संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा हुई। तत्पश्चात स्वर्गीय पण्डित भोलानाथ प्रसन्ना के मार्गदर्शन में आप दोनों ने प्रयागराज में ही बांसुरी वादन की विधिवत शिक्षा प्राप्त की। बाँसुरी वादन, विराट हस्ताक्षर पद्मविभूषण पण्डित हरिप्रसाद चौरसिया के सान्निध्य में रहकर बाँसुरी वादन की बारीकियाँ सीखने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ। विगत पन्द्रह वर्षों से आप दोनों को ही अपने गुरु के साथ देश एवं विदेशों में कई बार बाँसुरी वादन हेतु मंच साझा करने का अवसर प्राप्त हुआ। आपने दिल्ली, औरंगाबाद, इलाहाबाद, कोलकाता, वाराणसी, हरियाणा, पुणे, मुम्बई, ऑस्ट्रिया, ऑस्ट्रेलिया, स्विट्जरलैंड, जर्मनी, फ्रांस, बेल्जियम, हॉलैंड, लंदन, दुबई, श्रीलंका, अमेरिका, आदि स्थानों पर बाँसुरी वादन की एकल एवं समूह प्रस्तुतियाँ की हैं। इनमें से कुछ प्रमुख प्रस्तुतियाँ हैं अहमदाबाद में सप्तक संगीत उत्सव, कोलकाता में डोवलिन संगीत सम्मेलन, लखनऊ में सहारा ज्योति दिवस, पुणे में सवाई गंधर्व संगीत समारोह, हुबली में डॉक्टर गंगूबाई हंगल शताब्दी समारोह, आदि। आपको पण्डित बिरजू महाराज के 75 वें जन्म वर्ष के उपलक्ष में दिल्ली के कमानी सभागृह में भी प्रस्तुतीकरण करने का अवसर प्राप्त हुआ। आप दोनों को ही वर्ष 2008 में संगीत नाटक अकादमी द्वारा उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ युवा पुरस्कार से अलंकृत किया जा चुका है। इसके अलावा सहारा परिवार लखनऊ की ओर से वर्ष 2012 में आपको एक्सीलेंस अवार्ड भी दिया गया।

प्रसाद खापर्डे, नासिक- गायन

रामपुर सहसवान घराना के सुप्रसिद्ध गायक उस्ताद रशीद खान के वरिष्ठ शिष्यों में से एक नाम है प्रसाद खापर्डे। मूलत: विदर्भ महाराष्ट्र के संगीत प्रेमी परिवार में जन्म लेने वाले श्री प्रसाद खापर्डे की संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा श्री भालेराव, डी वी पनके, पण्डिता सुमंताई चौधरी एवं पद्मभूषण स्वर्गीय उस्ताद अब्दुल रशीद खान जैसे गुरु के सान्निध्य में हुई। आपने अमरावती विश्वविद्यालय से वर्ष 1997 में भारतीय शास्त्रीय संगीत गायन में स्नातकोत्तर की उपाधि भी प्राप्त की है। आपने सवाई गंधर्व संगीत महोत्सव, श्री बाबा हरीवल्लभ संगीत सम्मेलन, केसरबाई केरकर समारोह, मांडू उत्सव, सप्तक उत्सव, पण्डित वसंतराव देशपाण्डे समारोह आदि में अपनी गायकी का लोहा मनवाया है। साथ ही आपने मराठी फिल्म के लिए भी गायन किया है। आपने स्पेन एवं तुर्की के संगीतज्ञों के साथ भारतीय शास्त्रीय संगीत का फ्यूजन तैयार किया जिसे काफी सराहा भी गया है। इसके अलावा लोक संगीत में राजस्थानी मांगणियार के साथ भी फ्यूजन तैयार किया है। अब तक आप देश एवं विदेश ने अनेक प्रस्तुतियाँ दे चुके हैं। आपने कला अकादमी गोवा में गुरु के तौर पर कार्य किया एवं आकाशवाणी के ए ग्रेड कलाकार होने के साथ-साथ आप भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के पैनल कलाकार भी हैं। कठोर रियाज और अनुशासन में ढली आपकी गायकी का परिणाम महर्षि गंधर्व वेद पुरस्कार, वसंतराव देशपाण्डे स्मृति पुरस्कार, नवरस रिकॉर्ड पुरस्कार आदि के रूप में परिणित हुआ है। वर्तमान में आप भारतीय शास्त्रीय संगीत को देश और विदेशों में अपने शिष्यों के माध्यम से अगली पीढ़ी में संस्कारित करने का कार्य कर रहे हैं।

एकातेरिना अरिस्टोवा-तातियाना शांद्रकोवा, रशिया - विश्वसंगीत

एकातेरिना एरिस्टोवा और तातियाना शांद्राकोवा पियानो और डबल बास की जैज़ शैली को प्रस्तुत करने वाली युगल जोड़ी है। आप दोनों का ही सम्बन्ध रशिया के सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक और सांस्कृतिक राजधानी माने जाने वाले शहर सेंट पीटर्सबर्ग से है। युगल जोड़ी के रूप में वादन शुरू करने से पहले आप दोनों ने ही अपनी संगीत यात्रा शास्त्रीय संगीत के माध्यम से तय की जिसमें दोनों ही कलाकारों की अत्यधिक रुचि जैज़ शैली में होने के कारण आपने अपने अलग वाद्ययंत्रों के माध्यम से संगीत में परस्पर संवाद स्थापित कर इस जोड़ी को अंजाम दिया। अब तक आप मंच पर कई प्रस्तुतियाँ कर चुकी हैं जिनमें आपके द्वारा जैज़ संगीत, लोकप्रिय गानों के अलावा कुछ स्वरचित रचनाओं को भी प्रस्तुत किया है।

रमाकान्त गायकवाड़, मुम्बई- गायन

रमाकांत गायकवाड़ का जन्म मई 1988 को एक ऐसे परिवार में हुआ जहाँ संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा आपने पिताजी पण्डित सूर्यकांत गायकवाड़ एवं माताजी श्रीमती संगीता गायकवाड़ के सान्निध्य में प्राप्त की। संगीत के प्रति निष्ठा ने पद्मश्री पण्डित जगदीश प्रसाद, जो कि उस्ताद बड़े गुलाम अली खान साहब के शिष्य रहे हैं, के रूप में भी आपको गुरु सानिध्य का सौभाग्य प्रदान किया। वर्तमान में आप लब्धप्रतिष्ठित संगीतज्ञ पण्डित नयन घोष के शिष्य हैं। किराना और पटियाला घरानों की पारम्परिक गायकी को अपनी आवाज से मूर्तरूप देने वाले गायक के रूप में आपने मात्र छह वर्ष की अल्पायु में ही मंच पर सजीव प्रस्तुतियाँ देनी प्रारम्भ कीं। अब तक आपने देश में एवं विदेश में कई प्रस्तुतियाँ की हैं जिनमें से सवाई गंधर्व भीमसेन संगीत महोत्सव पुणे, इंडिया हैबिटेट सेंटर संगीत उत्सव दिल्ली, उस्ताद गुलाम जफर खान स्मृति समारोह झांसी, पण्डित फिरोज दस्तूर फाउण्डेशन संगीत समारोह मुम्बई आदि प्रमुख हैं। इसके अलावा आपने कई टीवी एवं रेडियो चैनल हेतु भी गायन किया है। आपको कई प्रतिष्ठित अलंकरणों एवं पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जिनमें सवाई गंधर्व स्कॉलरशिप, पण्डित राम मराठे पुरस्कार, भारतरत्न पण्डित भीमसेन जोशी स्वर भास्कर पुरस्कार, भारतरत्न डॉ एमएस सुब्बूलक्ष्मी फैलोशिप, संगीत विशारद एवं संगीत अलंकार जैसी उपाधियाँ शामिल हैं। इसके अलावा आपने कई ऐसी प्रतियोगिताओं में पुरस्कार अर्जित किए हैं जिनमें निर्णायक के तौर पर ख्यातिप्राप्त संगीतकार जैसे पण्डित सुरेश तलवलकर, श्रीमती शोभा अभ्यंकर, श्री रतन मोहन शर्मा पण्डित, रोनू मजूमदार, पण्डित संजीव अभ्यंकर आदि उपस्थित रहे हैं।

भरत नायक, ग्वालियर- सितार

भरत नायक का जन्म ग्वालियर के संगीतप्रेमी परिवार में हुआ। आपने संगीत की प्रारंभिक शिक्षा अपने पिता श्री सुरेश नायक जी से प्राप्त की। आपने विधिवत सितार की शिक्षा श्री पन्नालाल कोष्टि जी से प्राप्त की। आपने नाट्य कला मंदिर, ग्वालियर में शास्त्रीय संगीत में सितार वादन की सराहनीय प्रस्तुति दी एवं आकाशवाणी केंद्र ग्वालियर में शास्त्रीय संगीत प्रतियोगिता में सितार वादन में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसके साथ ही आपने नरसिंहगढ़ में विश्व संगीत दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम एवं जनजातीय संग्रहालय के तत्वाधान में उज्जैन में आयोजित श्रद्धा संगीत समारोह में भी सितार वादन प्रस्तुत किया है। आपने बकायन संगीत समारोह में नृत्य के साथ प्रशंसनीय संगत के अलावा खजुराहो नृत्य समारोह में भी कथक नृत्य के साथ सराहनीय प्रस्तुति दी है। गालव वाद्यवृंद में आप प्रमुख संगीत निर्देशक हैं जिसमें आपके द्वारा निर्देशित संगीत प्रस्तुतियों में सितार, वायलिन, सारंगी, शहनाई, हारमोनियम एवं ताल वाद्यों में पखावज, तबला, ढोलक, नक्कारा आदि का प्रयोग किया जाता है। इस वाद्यवृंद की प्रस्तुतियों में किसी भी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक वाद्यों का प्रयोग नहीं किया गया है। आपके सितार वादन में लयकारी का विशेष रसास्वादन है। वर्तमान में आप आकाशवाणी शास्त्रीय संगीत के बी-हाई ग्रेड के कलाकार हैं एवं शासकीय माधव संगीत महाविद्यालय, ग्वालियर में सहायक व्याख्याता के पद पर कार्यरत हैं।

विनोद कुमार द्विवेदी एवं आयुष कुमार द्विवेदी, कानपुर-ध्रुपद गायन युगल

पण्डित विनोद कुमार द्विवेदी ध्रुपद एवं धमार शैली के एक प्रसिद्ध शास्त्रीय गायक हैं जिन्होंने संगीत शिक्षा पण्डित काशीनाथ बोडस, पण्डित अभय नारायण मलिक, पण्डित विदुर मलिक आदि मूर्धन्य गुरुओं के सान्निध्य में प्राप्त की। देश एवं विदेशों में अनेक मंच प्रस्तुतियाँ करने के साथ ही आप अनेक पुरस्कारों से भी अलंकृत किए जा चुके हैं जैसे कला विभूषण, संगीत नादयोगी, संगीत सम्मान, सुर गंधर्व मणि अवार्ड आदि। आप संगीत नाटक अकादमी द्वारा संचालित ध्रुपद केन्द्र कानपुर में मुख्य गुरु के रूप में संगीत प्रशिक्षण प्रदान कर रहे हैं। गायन के अलावा आपने अब तक लगभग 500 से ज्यादा शास्त्रीय संगीत में गाए जाने वाली बंदिशों की रचना भी की है।

आयुष कुमार द्विवेदी अपने ही पिता की परम्परा को आगे बढ़ाने वाले उन युवा कलाकारों में से हैं जो आज भी ध्रुपद जैसी पारम्परिक गायकी को समर्पण और अनुशासन के साथ सीख कर मंच पर उसकी गरिमा बनाए रखे हैं। आपने अब तक पिताजी के साथ कई कार्यक्रमों में गायन प्रस्तुत कर अपना एक अलग स्थान बनाया है। आपने प्रयाग संगीत समिति, प्रयागराज से स्नातकोत्तर उपाधि, संगीत प्रवीण प्राप्त की है जिसमें आपको प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। आपने अब तक हरीवल्लभ संगीत समारोह, ध्रुपद समारोह, नाना पानसे संगीत समारोह, ऑल इंडिया म्यूजिक फेस्टिवल आदि में अपनी मंच प्रस्तुति के द्वारा लोगों के बीच अपना एक अलग स्थान बनाया है।

शिराज अली खाँ, कोलकाता- सरोद

संगीतज्ञ घराने में जन्में शिराज अली खाँ अत्यंत उत्कृष्ट युवा सरोद वादक हैं। प्रसिद्ध मैहर घराना की परम्परा के प्रतिनिधि शिराज सुप्रसिद्ध आचार्य बाबा अलाउद्दीन खाँ के पड़पोते एवं स्व. उस्ताद अली अकबर खाँ के पोते हैं। शिराज अली खाँ ने मात्र 5 वर्ष की आयु में संगीत की शिक्षा अपने पिता स्व. ध्यानेश खाँ के सानिध्य में प्रारम्भ की। पिता की असमय मृत्यु के कारण शिराज ने दादा स्व. उस्ताद अली अकबर खाँ, चाचा उस्ताद आशीष खाँ एवं अपनी चाची श्रीमती अमीना परेरा के संरक्षण में संगीत शिक्षा जारी रखी। मात्र 15 वर्ष की आयु में शिराज अली खाँ ने पहला एकल प्रदर्शन वर्ष 2000 में दिया। आपने बाबा अलाउद्दीन खाँ संगीत समारोह-मैहर, अलाउद्दीन खाँ संगीत समारोह-कोलकाता एवं डोवर लेन म्युजिक कान्फ्रेन्स में सरोद वादन की प्रस्तुतियाँ दी। हाल ही में आप अपने चाचा उस्ताद आशीष खाँ के संग कोनया म्युजिक समारोह में सम्मिलित हुए।

सरिता पाठक यजुर्वेदी, नई दिल्ली- गायन

डॉ. सरिता पाठक यजुर्वेदी का ताल्लुक रामपुर घराना की समृद्ध परम्परा से है। उत्तराखंड के एक संस्कृति प्रेमी परिवार में जन्मी डॉ. सरिता यजुर्वेदी ने मात्र पाँच वर्ष की आयु से ही कर्नाटक के सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ पण्डित शंकर नाथ पाटिल के सान्निध्य में संगीत की विधिवत शिक्षा प्रारम्भ की। तत्पश्चात आपने हिन्दुस्तानी शैली संगीत का प्रशिक्षण ख्यातिप्राप्त शास्त्रीय गायक विदुषी सुलोचना बृहस्पति के मार्गदर्शन में गुरु-शिष्य परम्परा के रूप में जारी रखा। आप खयाल, ठुमरी, दादरा, टप्पा, भजन एवं लोकसंगीत की मूर्धन्य गायिका हैं। बचपन से लेकर अब तक आपने अपनी प्रतिभा के लिए अनेक पुरस्कारों एवं सम्मानों को प्राप्त किया है। आपने दिल्ली राज्य की साहित्य कला परिषद स्कॉलरशिप एवं राष्ट्रीय स्कॉलरशिप के साथ दिल्ली विश्वविद्यालय से दौलतराम महाविद्यालय की स्कॉलरशिप भी प्राप्त की जहाँ से आपने शास्त्रीय संगीत में एमफिल एवं पीएचडी भी सम्पूर्ण की। आप अनेक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं एवं संगोष्ठियों में प्रतिभागिता कर चुकी हैं। देश एवं विदेश के अनेक प्रसिद्ध मंचों पर आपने अपनी कला का प्रदर्शन किया है जिनमें साहित्य कला परिषद दिल्ली द्वारा आयोजित पाँचवा युवा महोत्सव, आचार्य बृहस्पति संगीत सम्मेलन चंडीगढ़, पौड़ी उत्सव, मालवा महोत्सव, भक्ति संगीत उत्सव, श्याम संगीत सम्मेलन आदि प्रमुख हैं। वर्तमान में आप दिल्ली विश्वविद्यालय अंतर्गत भारती महाविद्यालय के कला विभाग की विभागाध्यक्ष के तौर पर कार्यरत होने के साथ-साथ लगभग पच्चीस वर्षों से गुरु-शिष्य परम्परा से कई युवा कलाकारों को भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रशिक्षण भी देती आ रही हैं।

युसुफ रूह अलौश, इज़राइल - विश्वसंगीत

युसुफ रूह अलौश इज़राइल के प्रसिद्ध गिटार वादक और इजराइल का प्रसिद्ध वाद्ययंत्र बजूकी वादक हैं। इजराइल के मशहूर संगीतकार याकोब रैबिट्स के मार्गदर्शन में आपने वादन करना सीखा। तत्पश्चात आप मध्य पूर्व, ग्रीस, भारत आदि कई देशों की यात्रा कर अपनी वादन तकनीक को लगातार निखारने का प्रयास कर रहे हैं। आप विश्वभर के प्रसिद्ध बैंड के साथ कई संगीत प्रस्तुतियाँ कर चुके हैं एवं द टर्बन्स नामक प्रसिद्ध स्ट्रीट शो आदि के साथ भी जुड़े हैं जिसके साथ आपने यूरोप एवं यूके की यात्रा भी तय की। समय-समय पर आपने बॉल्कन एवं मैक्सिकन शैलियों का भी उपयोग अपने संगीत में किया है। वर्तमान में आप वर्ष 2011 में स्थापित बैंड अजसान बॉल्कन के सबसे वरिष्ठ सदस्य हैं।

डॉ. मोनिका हितेन शाह, अहमदाबाद- गायन

अहमदाबाद से नाता रखने वाली शास्त्रीय एवं अर्ध-शास्त्रीय गायिका डॉ मोनिका शाह गुजरात में एक सुपरिचित नाम हैं। आप पद्मविभूषण ठुमरी साम्राज्ञी गिरजा देवी शिष्या रही हैं एवं इसके साथ ही आपने पण्डित रसिकलाल अंधारिया की शिष्या रहीं डॉ प्रदीप्ता गांगुली के सान्निध्य में भी संगीत का प्रशिक्षण प्राप्त किया। आपने संगीत में डॉक्टरेट की उपाधि में स्वर्ण पदक अर्जित किया। आप आराधना संगीत अकादमी की संस्थापक और निदेशक हैं जहाँ पर लगभग 200 से अधिक युवा विद्यार्थी आपके सान्निध्य में संगीत प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। आपकी अकादमी द्वारा ग्रीष्मकालीन, शीतकालीन एवं वर्षाकालीन संगीत आयोजन भी किए जाते हैं जिनमें विश्वभर से ख्यातिप्राप्त कलाकारों को प्रदर्शन हेतु आमंत्रित किया जाता है। आपने दुनिया भर में विभिन्न सम्मेलनों में लगभग 1500 से अधिक शास्त्रीय, अर्ध-शास्त्रीय गायन एवं भजन गाए हैं जिनमें सप्तक, आराधना, बैजू समारोह, तारारिनी महोत्सव, गुजरात आदि प्रमुख हैं। आपको गायन प्रतिभा के लिए कई पुरस्कारों से अलंकृत किया जा चुका है जैसे गुजरात गौरव पुरस्कार, सूर्यमणि पुरस्कार, संगीत शिरोमणि, संगीत रत्न आदि। आप भारतीय शास्त्रीय संगीत के व्यापक प्रचार हेतु पिछले चौदह वर्षों से यूएसए एवं कनाडा जैसे देशों में संगीत सम्मेलनों और कार्यशालाओं के माध्यम से अनेक शिष्यों को भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रशिक्षित करती आ रही हैं। अब तक आपके द्वारा जारी की गई शास्त्रीय एवं अर्ध-शास्त्रीय गायन एवं भजनों की लगभग तीस सीडी को सभी संगीत प्रेमियों द्वारा सराहा गया है।

तारा किनी, बैंगलोर- ध्रुपद गायन

तारा किनी ने संगीत की शिक्षा प्रसिद्ध संगीत कलाकार स्वर्गीय श्री नारायण राव पटवर्धन, श्रीमती मीरा खिरवड़कर देशपाण्डे और स्वर्गीय पण्डित रामाराव विनायक के सान्निध्य में प्राप्त की। वर्तमान में आप खयाल शैली का प्रशिक्षण विदुषी ललिता जे राव एवं ध्रुपद गायकी का प्रशिक्षण पद्मश्री गुन्देचा बन्धु से प्राप्त कर रही हैं। आप सुनाद नामक संगीत संस्थान की स्थापिका एवं निर्देशिका हैं। इस संस्थान में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रचार हेतु देश के कई शहरों में 90 से अधिक प्रस्तुतियाँ की हैं। आपकी संस्था सुनाद ने पद्मभूषण श्री एम सुनाद की प्रेरणा से चार प्रमुख उपनिषदों पर आधारित कार्यक्रम को ध्रुपद, नृत्य, योग और कथावाचन के धागे में पिरोकर सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया है, जिनका पूरा निर्देशन एवं संकल्पना आपके द्वारा की गई। आप शिक्षा एवं संगीत की स्वतंत्र सलाहकार भी हैं एवं बंगलुरु, आंध्र प्रदेश, दिल्ली और अहमदाबाद के कई प्रसिद्ध संस्थानों से जुड़ी हैं जहाँ आपके द्वारा पाठ्यचर्या निर्माण एवं शिक्षक विकास के कार्यक्रमों को आप संचालित करती हैं। आप वर्तमान में शंकर महादेवन संगीत अकादमी में सलाहकार हैं। आपने वर्ष 2017 में संगीत नाटक अकादमी से सीनियर रिसर्च फैलोशिप प्राप्त की है।

अरूणा साँईराम, चेन्नई- कर्नाटक संगीत

कर्नाटक शास्त्रीय संगीत की मूर्धन्य महिला गायिकाओं में जाना पहचाना नाम अरूणा साईराम हैं। आपने संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा माता श्रीमती राजलक्ष्मी सेथुरमन के सान्निध्य में प्रारम्भ की। तत्पश्चात तंजौर के राजघराने के संगीतकारों की छठवीं पीढ़ी की गायिका श्रीमती टी वृंदा आपकी गुरु रही हैं। आपने ऐतिहासिक वीणाधनम्मल की समृद्ध परम्परा का निर्वहन करते हुए अपनी गायकी को उस स्तर पर पहुँचा दिया है जहाँ कलारसिक उसे एक गहन आत्मानुभूति मानते हैं। अब तक आपने देश एवं विदेशों में अनेक प्रस्तुतियाँ दी हैं जिनमें उल्लेखनीय हैं लंदन के रॉयल अल्बर्ट हॉल में उनकी प्रस्तुति जिसे सुनने के बाद समीक्षकों ने उन्हें 'आत्मा की नवीन सामग्री' की उपाधि दी। सुश्री साईराम को संगीत अकादमी चेन्नई द्वारा वर्ष 2018 में संगीत कलानिधि सम्मान से अलंकृत किया गया जोकि कर्नाटक शैली के संगीत के लिए भारत में किसी संस्था द्वारा दिया जाने वाला प्रतिष्ठित सम्मान है। संगीत के क्षेत्र में आपके योगदान को देखते हुए वर्ष 2009 में आपको पद्मश्री से भी विभूषित किया गया। इसके अलावा आप संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त कर चुकी हैं। विदेशों में आपने कार्नेगी हॉल, लंदन, थिएटर द वील, पेरिस और रॉयल हॉल, लॉस एंजेलिस जैसे अनेक सम्मानीय मंचों पर प्रदर्शन किया है। साथ ही आपने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक ख्याति प्राप्त संगीतकारों के साथ कर्नाटक शैली की प्रस्तुतियाँ दी हैं। वर्ष 2011 में आपके द्वारा स्थापित संस्था नादयोगम के माध्यम से आप निर्धन विद्यार्थियों को संगीत की शिक्षा प्रदान कर रही हैं। इसके अलावा आप समय-समय पर कैंसर पीड़ितों की वित्तीय सहायता भी करती रही हैं।

शौनक अभिषेकी, पुणे- गायन

मूर्धन्य गायक पण्डित जितेंद्र अभिषेकी के पुत्र पण्डित शौनक अभिषेकी आगरा एवं जयपुर घराने की हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत शैली के सुपरिचित गायक हैं। पिता से ही संगीत की शिक्षा एवं संस्कार प्राप्त करने के अलावा आपको जयपुर घराने की परम्परा की गायिका श्रीमती कमल तांबे के मार्गदर्शन में भी संगीत सीखने का अवसर प्राप्त हुआ। शास्त्रीय गायन में पारंगत होने के साथ ही आप ठुमरी, टप्पा, नाट्यसंगीत एवं अभंग गायन की विधा में भी प्रवीण हैं। मंच प्रदर्शन के अलावा आप कई विशेष कार्यक्रमों जैसे स्वर अभिषेक, तुलसी के राम और कबीर एवं मराठी अभंग वाणी से भी जुड़े हैं। आपने देश के लगभग हर महत्वपूर्ण संगीत समारोह में शिरकत करने के अलावा यूएसए, यूके, यूएसएसआर, खाड़ी देश, थाईलैंड, भूटान, साउथ अफ्रीका और कई यूरोपीय देशों में भी संगीत प्रस्तुतीकरण किया है। म्यूजिक टुडे, सोनी म्यूजिक, टाइम्स म्यूजिक, निनाद म्यूजिक, ईएमआई जैसी कई बड़ी कंपनियों के लिए आपने रिकॉर्डिंग भी की है। पिछले पंद्रह सालों से गुरुकुल परम्परा के माध्यम से आप भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रशिक्षण देते आ रहे हैं। आपके पिताजी द्वारा भारतीय शास्त्रीय संगीत को समर्पित तरंगिणी सांस्कृतिक प्रतिष्ठान के तत्वधान में आप उभरते हुए युवा कलाकारों को स्कॉलरशिप देने के साथ ही वरिष्ठ शास्त्रीय कलाकारों को वित्तीय सहायता भी प्रदान करते हैं। आपकी बहुमुखी प्रतिभा को कई पुरस्कारों के रूप में सराहा गया है जैसे पुणे की आशा पुरस्कार, बालगंधर्व पुरस्कार, ज़ी गौरव पुरस्कार, मास्टर दीनानाथ मंगेशकर पुरस्कार, पण्डित राम मराठे पुरस्कार आदि।

अभिषेक व्यास, उज्जैन- गिटार

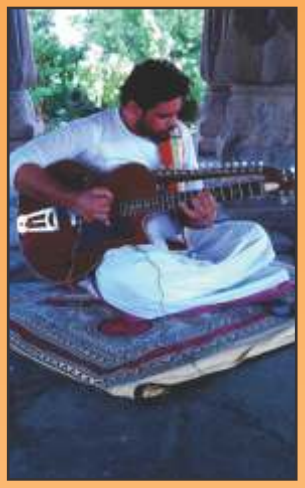

अभिषेक व्यास का जन्म खाचरौद के सांगीतिक परिवार में हुआ। संगीत की शिक्षा आरम्भ से ही अपने दादा स्व. श्री घनश्यामलाल जी व्यास एवं पिता स्व. श्री गिरिराज व्यास से प्राप्त की तथा तबला, गायन एवं अपनी पारिवारिक संगीत परम्परा पुष्टिमार्गीय हवेली संगीत का प्रशिक्षण प्राप्त किया। अभिषेक ने स्पेनिश गिटार को भारतीय शास्त्रीय संगीत के अनुरूप ढालने के लिए अनेक प्रकार के मौलिक परिवर्तन अपने वाद्य में किए। तारों के संयोजन में परिवर्तन कर तारों की संख्या बढ़ाकर गिटार वादन की नयी शैली विकसित की जिससे भारतीय संगीत की विशेषताएँ गमक, मींड, घसीट, जोड़-झाला, कृन्तन एवं कण आदि का वादन सम्भव हो। इस नवीन वाद्य एवं वादन शैली में भारतीय संगीत के पारम्परिक वाद्यों जैसे सितार, वीणा एवं सरोद आदि की विशेषताओं का समावेश है। तंत्रकारी के साथ गायकी अंग एवं ध्रुपद अंग का समावेश अभिषेक के वादन की विशेषताएँ हैं। प्रसार भारती द्वारा आपको बी-हाई ग्रेड प्रदान की गई। आपने देश के विभिन्न प्रतिष्ठित संगीत समारोहों में अपनी कला का सफल प्रदर्शन किया है। पिता के अतिरिक्त आपने उज्जैन के वरिष्ठ सितार वादक स्व. श्री ईश्वरचंद्र शर्मा एवं श्री शहजाद शेख से विधिवत शिक्षा प्राप्त की। संगीत क्षेत्र में योगदान हेतु आपको `विक्रम प्रतिभा सम्मान-2018', संस्कार भारती द्वारा `कला साधक सम्मान-2018' एवं कलाश्री सम्मान आदि तथा आपकी प्रमुख उपलब्धियों में कुछ उल्लेखनीय हैं- ग्लोबल हार्मोनी-2008, राज्य युवा उत्सव-2008 प्रमुख हैं।

सुदीप भदौरिया, ग्वालियर- ध्रुपद गायन

मध्यप्रदेश के भिण्ड जिले में जन्में सुदीप भदौरिया का रुझान बचपन से ही संगीत के प्रति था तथा बाल्यावस्था में सुगम संगीत से भी जुड़े रहे। आपने संगीत की आरम्भिक शिक्षा स्व. श्रीराम मोहन मिश्रा जी व श्री सुखदेव सिंह कुशवाह जी से प्राप्त की। वर्ष 2015 में गायिकी के ध्रुपद अंग की ओर रुझान के कारण आप ध्रुपद सीखने के लिए ग्वालियर आये। आपको संस्कृति विभाग के अंतर्गत संचालित राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर द्वारा विशेष कक्षा में चयनित किया गया। गुरू श्री अभिजीत सुखदाणे के सान्निध्य में ध्रुपद गायन की विधिवत शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। आप ऑल इंडिया रेडियो आकाशवाणी व दूरदर्शन के ध्रुपद धमार के नियमित ग्रेड के कलाकार हैं। आपने देशभर में होने वाले विभिन्न प्रतिष्ठित सांगीतिक मंचों पर एकल व युगल ध्रुपद गायन की प्रस्तुति से दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया है, जिनमें से विरासत-देहरादून, बैजू बावरा समारोह-चंदेरी, भोजपुर महोत्सव-भोपाल, ध्रुपद मेला-बनारस, रागांजली-शिवपुरी, राष्ट्रीय संस्कृति महोत्सव-ग्वालियर, दुर्गा उत्सव-कोलकाता, ट्रेड फेयर-ग्वालियर, वॉइस ट्यून-नागपुर, ध्रुपदांजलि-जिया फरीदुद्दीन डागर पुण्य स्मृति समारोह-ग्वालियर, उस्ताद जिया मोहिउद्दीन डागर `बैठक' पनवेल-मुम्बई, ध्रुपद समारोह ग्वालियर आदि प्रमुख हैं। वर्तमान में आप प्रस्तुति के अलावा ध्रुपद गायन की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं व निरन्तर अपने गुरू से इस शैली के विषय में गहन शिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

संजय राठौर एवं साथी, ग्वालियर - तबला

संजय राठौर का जन्म उज्जैन के सांगीतिक परिवार में हुआ जहाँ उन्होंने तबला वादन की प्रारम्भिक शिक्षा अपने पिता एवं गुरु श्री ईश्वर लाल राठौर जी के सान्निध्य में प्राप्त की। आपके पिता आकाशवाणी इंदौर के बी हाई ग्रेड की कलाकार हैं। तत्पश्चात आपने उस्ताद अल्लाह दिया खान साहब, जयपुर से भी तबला वादन का मार्गदर्शन प्राप्त किया एवं परदादा उस्ताद, उस्ताद अमीर मोहम्मद खान साहब का भी सान्निध्य प्राप्त होने का आपको सौभाग्य प्राप्त हुआ। आपने अब तक देश के कई ख्याति प्राप्त मंचों पर तबला वादन की प्रस्तुतियाँ दी हैं। वर्ष 2008-09 में खेल एवं युवक कल्याण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा आयोजित युवा उत्सव में प्रदेश एवं राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया। आपको राष्ट्रीय तानसेन समारोह में वर्ष 2016 से 2020 तक अनेक सुविख्यात कलाकारों के साथ मंच प्रस्तुतियाँ देने का अवसर प्राप्त हुआ। आपने अब तक कई सुप्रसिद्ध कलाकारों के साथ संगत की है जैसे पण्डित सुवेंदु राव-सितार, कोलकाता, श्री चेतन जोशी-बाँसुरी, दिल्ली, प्रोफेसर विणाचंद्रा-सितार, अमेरिका, प्रोफेसर पठान-सितार, बड़ोदरा, उस्ताद फारुख लतीफ खाँ-सारंगी, मुम्बई आदि। वर्तमान में आप राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर में तबला संगत कलाकार के पद पर कार्यरत हैं।

वैशाली बकोरे, इन्दौर- गायन

वैशाली काशीकर बकोरे मूलत: इंदौर की भारतीय शास्त्रीय गायिका हैं जिन्होंने संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा श्री माधवराव जोशी और श्रीमती गोगाटे के सान्निध्य में एवं तत्पश्चात ख्याल गायकी का प्रशिक्षण विदुषी कल्पपना झोकरकर के सान्निध्य में प्राप्त किया। वर्तमान में आप सुपरिचित वायलिन वादक पण्डित कमल कामले जी के मार्गदर्शन में अपनी संगीत प्रशिक्षण की यात्रा को जारी रखे हुए हैं। सेनिया घराना का सफल प्रतिनिधित्व करते हुए आपकी विशेषता गायकी में वाद्य अंग प्रस्तुत करना है। खयाल गायकी के अलावा आप अर्ध-शास्त्रीय संगीत, भजन, अभंग, मराठी नाट्य संगीत और भावगीत गाती हैं। इंदौर में आपके द्वारा स्थापित स्वरयोग कला अकादमी की आप निदेशिका हैं जहाँ निरन्तर युवा कलाकारों को संगीत का प्रशिक्षण किया जाता है। आप दूरदर्शन और आकाशवाणी इंदौर की ए ग्रेड कलाकार हैं। अपने देश के कई नामचीन समारोहों में शिरकत की है एवं कई पुरस्कार भी प्राप्त किए जैसे अखिल भारतीय सनेश्वर समारोह इंदौर, गुरु पूर्णिमा महोत्सव, भोपाल, खजुराहो महोत्सव, चक्रधर समारोह, संगीत आचार्य बाबा भगवान दास जी समारोह, ज्ञानेश्वर मंडल द्वारा आयोजित संगीत समारोह आदि। आपको दिल्ली के संगम कला ग्रुप द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगीत प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ जिसमें पद्मश्री डागर बंधुओं द्वारा आपको सम्मानित किया गया। आपने कई राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता कर प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

राधिका उमडेकर, मुम्बई- विचित्र वीणा

वीणासाधिका डॉ. राधिका उमड़ेकर का संबंध एक ऐसे परिवार से है जहाँ संगीत के प्रथम गुरु के रूप में उन्हें पिता पण्डित श्री राम उमड़ेकर का सान्निध्य प्राप्त हुआ जो स्वयं एक प्रसिद्ध सितार, सुरबहार और रुद्रवीणा वादक हैं। आपके दादाजी पण्डित बालाभाऊ उमड़ेकर कुंडलगुरू ग्वालियर घराने के दरबारी गायक थे। साथ ही आप सुप्रसिद्ध ग्रैमी अवार्ड विजेता और विश्वविख्यात मोहन वीणा वादक पण्डित विश्व मोहन भट्ट की शिष्या भी हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत में डॉक्टरेट की उपाधि करने के साथ आपने रूद्रवीणा, सुरबहार, सितार, इसराज, जलतरंग, संतूर, हारमोनियम, गिटार जैसे कई भारतीय वाद्ययंत्रों के वादन का प्रशिक्षण प्राप्त किया है। सितार वादन में आपने चार बार स्वर्ण पदक प्राप्त किया। आपने मात्र तेरह वर्ष की अल्पायु से विचित्र वीणा का प्रशिक्षण प्राप्त किया एवं वर्तमान में आप प्रथम विचित्र वीणा वादिका है जिन्हें श्रोताओं की सराहना एवं प्रशंसा प्राप्त हुई है। आपने भारत एवं विदेशों में कई संगीत कार्यक्रमों में प्रस्तुतियाँ की हैं एवं संगीत प्रशिक्षण हेतु समय-समय पर कई कार्यशालाओं एवं व्याख्यानों में भी शामिल हुई हैं। आपके सान्निध्य में रहकर कई भारतीय एवं विदेशी छात्र विचित्रवीणा एवं अन्य वाद्ययंत्रों का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। आपको कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से भी अलंकृत किया जा चुका है जिनमें से प्रमुख है राष्ट्रीय युवा उत्सव कोलकाता में प्राप्त कांस्य पदक, मातरम उद्बोधन आश्रम पटना द्वारा प्रदत्त संगीत कला रत्न, ग्वालियर रत्न, नाद साधना समिति आगरा द्वारा नाद साधक सम्मान आदि।

सानिया पाटनकर, पुणे- गायन

सुश्री सानिया पाटनकर ने मात्र छह वर्ष की अल्पायु में किराना घराना की सुप्रसिद्ध गायिका स्वर्गीय लीलाताई घरपुरे से शास्त्रीय गायन की शिक्षा आरम्भ की। तत्पश्चात आपने चौदह वर्षों तक जयपुर-अतरौली घराना की मूर्धन्य कलाकार एवं गुरु डॉ. अश्विनी देशपाण्डे से प्रशिक्षण प्राप्त किया एवं आप उनकी वरिष्ठ शिष्यों में से एक हैं। इसके साथ ही आपने डॉ. अरविंद थत्ते के मार्गदर्शन में संगीत शास्त्र का भी अध्ययन किया। आप दूरदर्शन और आकाशवाणी की ए ग्रेड कलाकार हैं। आकाशवाणी द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगीत प्रतियोगिता की सभी तीन श्रेणियों यथा शास्त्रीय, अर्ध-शास्त्रीय और सुगम संगीत में आपको प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। आपको संगीत सेवा हेतु कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जा चुका है जैसे बाल गंधर्व पुरस्कार, स्वर माधुरी पुरस्कार, उस्ताद अल्लादिया खाँ जयपुर घराना पुरस्कार, पण्डित मलिकार्जुन मनसूर युवा पुरस्कार, राजीव गांधी पुरस्कार, कला गौरव पुरस्कार, स्वर विलास पुरस्कार आदि। आपने अब तक देश एवं विदेश में अनेक मंचों पर सुरीली प्रस्तुतियाँ दी हैं जिनमें से प्रमुख हैं सवाई गंधर्व महोत्सव पुणे, एलोवेरा अंतरराष्ट्रीय समारोह, बाबा हरीवल्लभ समारोह जालंधर, सप्तक अहमदाबाद, हंपी महोत्सव, पण्डित जितेंद्र अभिषेकी महोत्सव, केसरबाई केरकर महोत्सव गोवा, चक्रधर संगीत समारोह छत्तीसगढ़, आदि। शास्त्रीय संगीत गायन के अलावा आप संगीत की अन्य विधाओं जैसे ठुमरी, दादरा, टप्पा, ग़ज़ल, नाट्यगीत, भावसंगीत, भजन, अभंग और लोक संगीत में भी निपुण हैं।

हरिकथा एवं मीलाद शरीफ़, शहनाई वादन, परम्परा

तानसेन समारोह की सांगीतिक यात्रा 9 दशक पूरे कर शताब्दी के अंतिम दशक में प्रवेश कर चुकी हैं। समारोह से जुड़ी अनन्यतम गतिविधि के रूप में समारोह के शुभारम्भ दिवस पर प्रातः विख्यात संगीतकार तानसेन साहब की समाधि पर हरिकथा एवं मीलाद का आयोजन किया जाता है। यह वर्षों से तानसेन समारोह की महत्वपूर्ण गतिविधि रही हैं। परम्परानुसार हरिकथा ढोलीबुवा महाराज द्वारा एवं मीलाद शरीफ़ मौलाना साहब द्वारा प्रस्तुत की जाती है।

रागमाला

रंगों और रेखाओं में राग
रागमाला चित्रांकन परम्परा

चित्र प्रदर्शनी

26 से 29 दिसम्बर
संगीत सभाओं के समय में
तानसेन समारोह स्थल

वादी-संवादी

वादी-संवादी तानसेन समारोह की नियमित गतिविधि के रूप में स्थापित है। पिछले वर्षों में संगीत की पारम्परिक सभाओं के साथ-साथ विमर्श का क्रम निरन्तरता में आयोजित किया जाता रहा है। यह प्रयास सफल रहा और हमें पिछले तानसेन समारोहों में लाभ भी मिला। इस अनुष्ठान में देश के संगीत मनीषी घराने की सांगीतिक विशिष्टताओं के साथ-साथ संगीत के विभिन्न पक्षों पर, स्वयं की संगीत साधना और अवदान से कला रसिकों को अभिभूत करते रहे हैं। संगीत समारोह की समग्रता में विमर्श एक अनूठी कड़ी है। हम आभारी हैं कि वादी-संवादी की इस महनीय यात्रा में संगीत मनीषी और सुधी रसिकजन सहभागी बने हैं।

28 दिसम्बर -अपराह्न 3 बजे	29 दिसम्बर-अपराह्न 3 बजे
पण्डित सत्यशील देशपाण्डे	**डॉ. नर्मदा प्रसाद उपाध्याय**
बंदिशों में निहित सौन्दर्य तत्व एक संगीतमय प्रस्तुति-सोदाहरण व्याख्यान	रागमाला चित्रांकन परम्परा-प्रस्तुतिकरण सोदाहरण व्याख्यान

राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर

लोकार्पण

नव्यता के नायक
भारत रत्न पण्डित रविशंकर

दिनेश पाठक

"`बाबा अलाउद्दीन खाँ के बुलावे पर जब बालक रवि मध्यप्रदेश के न मालूम से कस्बे मैहर पहुँचा था तो उसकी उम्र बमुश्किल चौदह -पन्द्रह साल की थी और उसके मानस में समायी थी पेरिस और वियेना की रंगीन दुनिया, जहाँ वह दादा उदयशंकर के डांस ट्रूप के एक बाल कलाकार के रूप में सभी का दुलारा था। इस दुलार ने एक हद तक उसे समय से पहले ही वयस्क बना दिया था। कल्पना करें तो कितना कठिन था बालक रवि के लिए, संसार की सर्वोत्तम सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण एक चमक-दमक वाले माहौल से मध्यप्रदेश के अनजाने से कस्बे मैहर में बाबा अलाउद्दीन खाँ के खपरैल वाले घर की टिमटिमाती लालटेन के प्रकाश में अपने जीवन लक्ष्य को ढूँढना। लेकिन दादा उदयशंकर का आदेश था कि तुम संगीत सीखोगे तो बाबा अलाउद्दीन खाँ से और बाबा की शर्त थी, मुझसे संगीत सीखना है तो तुम्हें मैहर आना होगा। कदाचित यही नियति थी और यही सौभाग्य था मध्यप्रदेश का, कि संगीत के इस विश्वदूत में सितार के सुरों का अंकुरण हमारी इसी धरती पर हुआ...'

अथवा

तानसेन समारोह की उस रात पण्डित रविशंकर के सितार का जादू, सुनने वालों के सर चढ़कर बोला था... लेकिन तालियों की घनघोर गूँज के बीच, निर्लिप्त भाव से पण्डित रविशंकर कह रहे थे... दरअसल ऐसे स्थानों का खुद-ब-खुद एक जादू होता है, जिससे प्रस्तुति देते समय रोमांच की अनुभूति होती है, बस उसे साधने का प्रयत्न करना होता है... शायद कोई मिसाल नहीं दी जा सकती। इस महान कलाकार की विनम्रता की...

संगीत नगरी ग्वालियर में सुर सम्राट तानसेन की समाधि के पार्श्व में रविशंकर के सितार से झरने वाले सुरों के समान सुर, कई वर्ष पहले मार्च 1976 में, हजारों मील दूर, न्यूयॉर्क के कैथेड्रल ऑफ सेंट जॉन द डिवाइन में उपस्थित छह हज़ार से अधिक श्रोताओं के सामने भी, देर शाम से सुबह तक झरे थे। पण्डित रविशंकर को विदेशों में कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए दो दशक पूर्ण होने पर आयोजित उस विशेष समारोह में, रात के अन्तिम राग ने, वहाँ उपस्थित विशाल श्रोता समूह को तब रोमांचित कर दिया था, जब रात भर हल्की वर्षा के साथ चल रहे सितार वादन के अन्तिम पन्द्रह मिनट के दौरान सूर्योदय हुआ और प्रभात की प्रथम किरण, खिड़कियों के धूमिल शीशों को भेदकर उनके चेहरे पर चमक उठी... यही थे रवि, पूर्व से पश्चिम तक अपनी उदात्त आभा बिखेरते..."

The heart of Incredible India

पर्यटन गतिविधियाँ

म्यूज़िकल स्ट्रिंग्स ऑफ ग्वालियर

समय: सवेरे 10 बजे से शाम 5 बजे तक
बेहट-प्रसिद्ध शिव मंदिर, बंधौली-मोहम्मद ग़ौस का मक़बरा
तानसेन समाधि-ग्वालियर का किला

ज्वेल्स ऑफ द रेवाइन्स

समय: सवेरे 10 बजे से शाम 6 बजे तक
मितावली-पदावली -बटेश्वर-ककनमठ-राष्ट्रीय चम्बल अभयारण्य
(इंको-पार्क देवरी, मुरैना)-चम्बल सफारी

चम्बल बोट सफारी

राजघाट से डॉल्फिन प्वाईंट
सवेरे 9.30 बजे से शाम 5 बजे तक
राजघाट से तिगरी रिठौरा
सवेरे 9.30 बजे से 5 बजे तक

डे एक्सकर्ज़न टू द मिडिवल लैंड-ओरछा

समय: सवेरे 8 बजे से शाम 5 बजे तक
ग्वालियर-ओरछा-ग्वालियर

ग्वालियर सनराइज टूर

अवधि: 5 घंटे
समय: सवेरे 6 बजे से 11 बजे तक
सूर्य मंदिर-ग्वालियर का किला
गूजरी महल-डिजिटल संग्रहालय-महाराज बाड़ा

अधिक जानकारी एवं टूर बुकिंग हेतु संपर्क करें
मध्यप्रदेश पर्यटन, क्षेत्रीय कार्यालय, ग्वालियर
088710 75692, 09589949238
0751 2234557, 4056726

97वाँ

विश्व संगीत समागम

तानसेन समारोह

25 से 30 दिसम्बर, 2021 - ग्वालियर

म.प्र.शासन, संस्कृति विभाग

मध्यप्रदेश शासन

आज़ादी का अमृत महोत्सव

MADHYA PRADESH
The heart of Incredible India

97वाँ

विश्व संगीत समागम

तानसेन समारोह

2021

लाइव @MP culture department @tansensamaroh

@tansensamaroh

◈ कोरोना संक्रमण के लिए जारी दिशा-निर्देशों का पालन आवश्यक होगा ◈ प्रवेश : प्रथम आएं-प्रथम पाएं ◈ दो गज की दूरी मास्क है जरूरी।

◈ प्रवेश निः शुल्क ◈ कार्यक्रम परिवर्तनीय

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग के लिए जिला प्रशासन, नगर निगम ग्वालियर एवं मध्यप्रदेश पर्यटन के सहयोग से
उस्ताद अलाउद्दीन ख़ाँ संगीत एवं कला अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्, भोपाल का प्रतिष्ठा आयोजन

स्थानीय सम्पर्क
तानसेन कला वीथिका- पड़ाव, ग्वालियर
kalaacademymp@gmail.com, uakska@yahoo.com